'सुविचार-माळा'—मणको ४ थो.

श्री

कल्याण मंदिर स्तोत्र.

याने

कल्याणरुपी मंदीरमां प्रवेश करावनार 'ध्यान' नो पाठ.

प्रसिद्ध कर्त्ता.

वाडीलाल मो. शाह.

अधिपति, 'जैनसमाचार'

[illegible]दावाद.

'जैनसमाचार' पत्रनी सने १९११ नी [illegible]हेली भेट.

पिसवेंवाळा श्रीयुत नेमीचंदजी पुनमचंदजी तरफथी भेट.

'सुविचार-माळा'नो मणको १ [illegible] रिदूनो रिपोर्ट (गुजराती.)

” ” २ -[illegible] शास्त्र.

” ” [illegible] -क्या ईश्वरे आ विश्व रच्युं ?

” ” [illegible] -कल्याण मंदीर स्तोत्र.

” ” ५ मो-संसारमें सुख कहां है ? (हिंदी)

” ” ६ ठो-दशवैकालिक सूत्र.

” ” ७ मो-धर्मसिंह-बावनी.

” ” ८ मो-महात्मा कबीरनां आध्यात्मिक पदो,

'सुविचार-माळा'-मणको ४ थो.

श्री

कल्याणमंदिर स्तोत्र

अथवा

कल्याणरूपी मंदिरमां प्रवेश

करावनार 'ध्यान'रूपी स्तोत्र,

जेमां

आत्मगोष्टि (बार भावना), दररोज धारवाना नियमो (बार व्रतनुं रूपांतर)

तथा ध्याननो पाठ वगेरनो समावेश करवामां आव्यो छे.

खरा दीलथी धर्मनी दरकारवाळा भव्योने

प्रातःकाळमां पाठ करवा माटे

प्रसिद्ध कर्त्ता

वाडीलाल मोतीलाल शाह.

अधिपति अने मालिक,

'जैनसमाचार' साप्ताहिक पत्र तथा 'जैनहितेच्छु' मासिक पत्र.

व्यवस्थापकः 'सुविचार प्रसारक मंडल'.

पांचकुवा—अमदाबाद.

आवृत्ति १ ली-प्रत १५००

वीरसंवत २४३७-इ. स. १९१०-विक्रम १९६७

मूल्य ०--३--०

अमदावाद "श्री भारतबंधु प्रिन्टिंग वर्क्स" मां

शाह वाडीलाल मोतीलाले छाप्युं.

प्रस्तावना.

प्रिय आत्म बंधु ! आ न्हानुं पुस्तक त्हारा हाथमां मुकती वखते त्हारी पासेथी एकज वचन मागवानुं छे के, ए पुस्तक दररोज स्हवारे ६ थी ६॥ वाग्या सुधी अथवा ६॥ थी ७ वाग्या सुधीना वखत मां, सूवाना ओरडा सिवायना हरकोइ एकांत ओरडामां, बंध-बारणे बेशीने, अवश्य एकवार आखुंए वांची जवुं. ' ध्यान ' सिवाय कदी कल्याण थवानुं नथी; अने आ न्हानुं पुस्तक ' ध्यान ' ना एक पाठ तरीके छे. एमांनी 'आत्मगोष्टि', प्रथम त्हारुं लक्ष बाह्य वस्तुओमांथी मुक्त करी त्हारा कबजामां सोंपशे. ए वखते घडीभर निर्मळ थयेलुं त्हारुं अंतःकरण 'निश्चय' अथवा 'व्रत' आदरवाने आतुर बनशे अने ते तक लइने "आजे अने हरहमेश धारवाना नियमो " ए मथाळानो लेख वांची तुं आजना दिवसने माटे बार 'निश्चय' बांधीश तो श्रद्धा राखजे के आखो दिवस त्हारुं मन आनन्द–आनन्दमां रहेवा पामशे. ' निश्चयो ' अथवा 'व्रतो' ने म्हें एवुं तो आधुनिक अने व्यवहारु रुप आप्युं छे के तेवा निश्चयोनो अमल थवाथी ख्याति, तनदुरस्ती, हृदयशुद्धि, निर्जरा अने ज्ञान वगेरे आनन्दनां दरेक कारण प्राप्त थया वगर रहेज नहि.

त्यार पछी कल्याणमंदिरमां प्रवेश करावनार प्रभुनुं स्तवन छे, जे अक्षरेअक्षर समजी समजीने वांचवाथी अपूर्व आनंद उपजवा संभव छे. आ स्तोत्र केवी रीते वांचवुं, ध्यान केवी रीते धरवुं ए बाबतनी सूचना पण ते साथेज करी छे.

वा. मो. शाह.

आत्मगोष्ठि.

प्रातःकाळमां एकांत जगा अने शुद्ध चित्ते अणुपूर्वी गणी, ए साधनथी मनने एकाग्र करी, पछी, बार भावना रुप आ आत्मगोष्ठि करवी.

* * *

(१) हे जीव ! त्हारी आसपास नजर कर. जे जे पदार्थो तुं जुए छे ते अने त्हारा पोतामां कांइ तफावत त्हने जणाय छे ? त्हारी आपसासनो दरेक पदार्थ–त्हारी लक्ष्मी, त्हारो वैभव, अरे त्हारुं पोतानुं शरीर पण विजळी के परपोटा जेवुं विनाशी छे--अनित्य छे. तुं गमे तेटलुं रखोपुं करीश तो पण ते दरेक पदार्थ विनाशी ते विनाशी ज छे,--नाश पामवानो एनो धर्म ज छे. ए सर्व विनाशी--अनित्य वस्तुओना वच्चमां तुं एक अविनाशी–नित्य, भूलो पडवाथी आवी च्हडयो छुं; माटे ए नाशवंत वस्तुओमां मोह न पामतां तुं अ-विनाशी एवा त्हने पीछान. आ क्षणना प्रसंगमां न राच.

भरत राजाए वींटीना प्रसंग उपरथी आवी " अनित्य भावना " मां डुबकी मारी हती, जेना फळ तरीके भावना रुपी समुद्र तळेथी तेओ कैवल्य मौक्तिक पाम्या हता.

(२) हे जीव ! जो तुं अविनाशी–नित्य एवा त्हने पिछानवा श्रम नहि ले तो नक्की मानजे के, नाश माटेज निर्मायली ए वस्तुओना नाश के वियोगथी त्हने थतां दुःखोमां दिलासो कोइ रीते नहि मळे. अने ज्यहार तुं ए बधी चीजोने छेल्ली सलाम करी हमेशने माटे चाली नीकळीश त्यहारे त्हने शरण आपवा कोइ नहि नीकळी आवे. अविनाशी एवा 'पोता' ने अथवा आत्माने जाणवा रुप जे 'धर्म' एज त्हारो सगो थशे. माटे शरण, सगुं के संबंधी जो त्हारे जोइतुं होय तो अविनाशी एवा त्हारा आत्माने ज शोधी–एना शरणे जा.

अनाथी मुनिने, मांदगीमां कोइ सगुं भाग न लइ शक्युं एटला ख्याल उपरथीज आवी " अशरण भावना " मां च्हडी जवानो प्रसंग मळ्यो हतो, के जे भावनाए त्हेमने पंचमहाव्रतधारी महाराजा बनावी मोक्षना अधिकारी बनाव्या हता.

(३) हे जीव! हमणां तुं जे जे वस्तुओमां आनंद मानी रह्यो छे ते वस्तुओ-अने तेथी पण वधारे खेंचाण करनारी वस्तुओ तुं अनेकवार पाम्यो छे; दरेक चीजना भोक्ता तरीके अने दरेक प्राणीना सगा तरीके सर्व प्राणी पदार्थ साथे त्हें अनेकवार संबंध जोडयो छे. पण कोइ संबंध टकी शक्यो नहोतो. माटे कोइ प्राणी के पदार्थना मोहमां दीवानो थइ अविनाशी एवा निज रुपने भूलीश नहि. एवी भूलथी ज तुं अपार एवा संसार–समुद्रमां

आधि वगरेना काळथी भम्या करे छे अने भ्रमणथी उद्भवतां दुःखो परवशपणे सहन करे छे. माटे ए दुःखोमांथी मुक्त थवुं होय तो संसारमां आवी पड्या छतां विरक्त पुरुष माफक वर्त; जळकमळवत् बनी जा.

श्री मल्ली कुंवरीए 'मोहन घर'मां विषयांध राजाओने पूर्व भवनो संबंध समजावी उपर कहेली " संसारभावना " मां प्रवेश कराववाथी ते सर्वे मोहपंकजमां फसायला राजाओ मोहना शत्रु बनी मोक्ष लक्ष्मी वर्या हता.

(४) हे जीव ! तुं एकलो छे, एकलो आव्यो हतो अने एकलोज जइश. एक घर छोडी बीजा घेर जती वखत, पहेला घरवाळुं कोइ पण सगुं त्हारी साथे आव्युं नथी अने आवशे पण नहि. ए सगाने मदद करवा माटे त्हें करेलां पापोनुं फळ भोगववा वखते पण ए कोइ आडो हाथ देवा नहि आवे; तो एवो राग–एवो संबंध–एवी मैत्री त्हारुं शुं लीलुं करनार छे ! तुं त्हारा पोतामां ज मित्र मेळव, निज रुपथी ज सगाइ कर.

सुंदर स्त्रीओथी घेरायला मृगापुत्रे रत्न जडीत महेलनी अगासीमांथी, रस्तामां दुर्बळ तपस्वीने जोइने आवी " एकत्व भावना " भावी हती, जेना प्रतापे त्हेणे नीज-रुप प्राप्त कर्युं हतुं.

(५) हे जीव ! त्हारा शिवाय तुं जे कांइ भाळे छे ते बधुं त्हाराथी अलग ज समजजे. क्षण पण न समजतो के स्त्री त्हारी छे के पुत्र त्हारो छे, लक्ष्मी त्हारी छे के देह त्हारी छे. जो एम ज होत तो ए लक्ष्मी त्हारा घरमां आव्या पछी त्हारी हयातीमां बीजुं घर करत ? ए स्त्री परलोक तो दूर रह्युं पण काष्ट सुधी पण त्हारी सोबत करवा-मांथी जात ? आ प्रत्यक्ष जोवाता खेल शुं एम नथी स्पष्ट समजावता के त्हारे आ इंद्रजाळथी निज रुपने अलग ज मानवुं अने एमां लिप्त न थतां निज रुपमां दृढ रहेवुं?

राजर्षि नमीराजे मांदगीना बीछानामां पड्या पड्या आ " अन्यत्व भावना " मां डुबकी मारी कैवल्य मौक्तिक मेळव्युं हतुं.

(६) हे जीव ! तुं कोने माटे दगा फटका करे छे ? आ रुपाळा हाडकाना पुतळा-ने पोषवा माटे ? जो तो खरो के आ पुतळुं गंधातुं छे–मळमूत्रथी भरेलुं छे–क्षणक्षणमां बगडी जाय छे–रोग जरानुं निवास धाम छे. हवे एने तुं साचवी साचवीने केटलुंक साचवीश ? 'खातर उपर दीवेल' करतां जरा तो विचार कर. तुं त्हेने साचववा, सुंदर करवा, हृष्टपुष्ट करवा हजारो प्रपंच करे छे, हजारो प्रकारनी हिंसा करे छे; पण ते छतां ते तो त्हने दगो ज दे छे. त्हारा खरा खप वखते ते त्हारी मरजी विरुद्ध लथडी पडे छे अने त्हने फसावे छे. हवे जो त्हारामां बुद्धि होय तो जेटली काळजी ए गुणचोर इ.पेंजर माटे धरावे छे एटलीज त्हारा पोता माटे—आत्मा माटे राखे तो अखुट गुप्त खजाना त्हारे माटे खुल्ला थाय ए निःशंक वार्त्ता छे.

रुपमां जेनो जोटो न मळे एवा सनतकुमार चक्रवर्तीना रुपमां, वात करतामां, वाट उठी हती ! त्हेना शरीरमां कीडा पडी या हता, जे रोग ७०० वर्ष शरीरमां रह्यो हतो, अने जेणे अंते उपर कहेली " अशुचि भावना " ना प्रतापे मोक्ष मळ्युं हतुं.

(७) हे जीव ! राग-द्वेष-अज्ञान—मिथ्यात्व इत्यादि " आश्रव " अथवा त्हारा आत्मस्वरुपने मलीन करनारो " वळगाट " छे. प्रतिक्षण त्हने ए नवां कर्मोनो लपेटो नाखतां ज जाय छे. एनाथी ज तुं छाकटानी माफक वर्ते छे. एनाथी ज भवभ्रमण करवा छतां तुं पोताने सुखी मानवानी मूर्खाइ करे छे. माटे ए चीकणा वळगाटने ओळख,—प्रथम ओळख, एमना स्वभावथी वाकेफ था अने पछी ए लागेला वळगाटने दूर करवाना तथा हवे पछी न लागे तेवा, उपाय ले. उपभोग-परिभोग आदिनी तृष्णा कमी कर; इच्छाओने मर्यादाथी बांध; जे कांइ त्हारी पासे छे त्हेनो मोह ओछो करी परमार्थे ज त्हारुं सर्वस्व मान, के जेथी 'आश्रव' नो मेलो वळगाट घणे दरज्जे मोळो पडे.

चंपानगरीना श्रावक समुद्रपाळे गोखमां बेठा बेठा, मुस्केटाट बांधेला एक चोरने वधस्थान तरफ लइ जवामां आवतो जोइ, "म्हारां कर्म उदय आवशे त्यहारे म्हारी पण ए ज वले छे" एम विचारी "आश्रव भावना" मां उतरी पछी कैवल्य प्राप्त कर्युं हतुं.

(८) हे जीव ! जो त्हने खचीत ज एवी श्रद्धा बेठी होय के रागद्वेषथ। नवां कर्मोनी आवक हमेशां त्हारामां चाल्यां ज आवे छे तो, ते आवकने रोकवा ज्ञान-ध्यानमां आरुढ था. ज्ञान-ध्यानमां आरुढ थयेलो आत्मा सिंह समान देखाव धारण करे छे, जेथी बीचारां कर्म त्हेनी आगळ आवी शकतां नथी. आवी रीते ज्ञान-ध्यानमां आरुढ थवुं एनुं नाम ज 'सम्वर' कहेवाय छे.

आ " सम्वर भावना " मां चढी जइ मन-वचन-कायाना जोग काबुमां राखी, चंडाळ कुळना हरकेशी मुनिए उत्तमोत्तम मोक्ष पद प्राप्त कर्युं हतुं.

(९) हे जीव ! आत्माने आवती राग-द्वेषादि कर्मोनी आवक बंध तो करी, पण पूर्वे थइ चूकेलां कर्मोनो समुह क्षय कर्या वगर कांइ त्हारो मोक्ष छे ? ए कर्मोने कापवा-निर्जरवा तप-संयम रुप ' निर्जरा ' नुं शरणुं त्हारे लेवुं जोइए छे. निर्जरा माटे ज तप करनारो माणस मान मागतो नथी, कीर्ति के धन इच्छतो नथी, लोकलज्जाने गणकारतो नथी, मात्र आत्मार्थे ज क्रिया करे छे अने ते क्रिया ज्ञान साथे करे छे. ज्ञान सहीत क्रियानुं ज नाम " निर्जरा " छे, के जे वडे अर्जुन मालिए छ महिनामां कर्म क्षय कर्यां हतां.

(१०) हे जीव ! आ प्रमाणे आवतां कर्मोने रोकी, थयेलां कर्मोने निर्जरी, हवे तुं चौद राजलोकनुं स्वरुप विचार. असंख्यात द्वप समुद्रनो ख्याल दृष्टि समक्ष लाव; अने पछी जो के आटला विशाळ अवकाशमां त्हारुं घर के तुं शा हिसाबमां छे ? असंख्याता द्विप समुद्रनी कुदरतनी वळी विचित्रता विचार; अने एमां तल्लीन थइ तुं देहाध्यास अने हुंपद छोड. आवी " लोक स्वरुप भावना " शिवराज ऋषिए भावी हती, ज्हेना प्रतापे ७ द्वीप समुद्र सुधीनी त्हेनी टुंकी दृष्टि लांबी थइ असंख्य द्विप समुद्र जोया अने कर्म खपाव्यां.

(११) हे जीव ! वैराग्य प्राप्त करावनारी उपली १० भावना भाव्या पछी तुं विचार के हवे शांत पडेला त्हारा जीवे शुं करवा जेवुं छे अने शुं छोडवा जेवुं छे ? आ निर्णय त्हने " सम्यक्त्व " वगर थइ शकवानो नथी. सम्यक् एटले साचा ज्ञान विना

म्हारो आत्मा दोरा वगरनी सुइ माफक पाप पुंजमां–अज्ञानमां खोवाइ जाय छे अने जशे. माटे सम्यक्त्व प्राप्त कर. ए 'सम्यक्त्व भावना' थी भरते मोक्ष प्राप्त कर्युं छे.

(१२) हे जीव! ज्ञान पाम्यो पण ते सार्थक तो त्यहारे ज कहेवाय के ज्ञानने व्यवहारमां मुक, अर्थात् धर्म आचर. सर्व प्राणीने पोता समान गणवा जेटली पायरीए आववुं अने सर्वने शाता पमाडवा शीखवुं एज धर्मनी साफल्यता छे; माटे एवो उत्तम धर्म धारण कर, के जेथी बीजाने शाता उपजावनार एवा त्हने अखंड–निराबाध–अमिश्र शाता उपजे.

आ बारमी "धर्म भावना" कडवा तुंबानुं शाक आरोगी जनार धर्म ऋषिए भावी हती, के ज्हेना प्रतापे त्हेमणे थोडी ज मीनीटमां सर्वार्थ सिद्ध विमान मेळव्युं हतुं.

* *
*

एकेक भावना ज्यहारे बेडो पार कराववा समर्थ छे तो बारे भावना भाववावाळाना मोक्षमां शो शंशय?

आजे अने हरहमेश धारवाना नियमो.

हुं निश्चय करुं छुं केः—

(१) आजना दिवसमां म्हाराथी बनशे त्यहां सुधी भूतदया पाळीश. सर्व जीवोने म्हारा सरखा जाणी इरादापूर्वक कोइ जीव म्हाराथी इजा न पामे एवी काळजी राखीश. अने 'अयतना' अथवा गेरकाळजीथी जीवोनो संहार न थइ जाय ए पण लक्षमां राखीश.

(२) आजना दिवसमां म्हाराथी बनशे त्यहां सुधी कोइ जातनुं कोइने नुकशान थाय एवुं असत्य वदीश नहि. हांसी–मश्करी अने परनिंदा तथा खाली गप्पां ए वगेरे जेटले रस्ते वाचानो दुरुपयोग थयो गणाय ए सघळा रस्ताथी दूर रहेवानी काळजी राखीश.

(३) आजना दिवसमां म्हाराथी बनशे त्यहां सुधी कोइनी चोरी करीश नहि, हरामना धननी इच्छा करीश नहि, व्यापारमां ठगाइ करीश नहि.

(४) आजना दिवसमां म्हाराथी बनशे त्यहां सुधी विषय वृत्तिने अंकुशमां राखीश. म्हारी पोतानी धर्मपत्नी सिवाय बीजी दरेक स्त्री प्रत्ये भगिनी भावथी जोइश (स्त्रीए कहेवुं के, म्हारा पोताना पति सिवाय बीजा दरेक पुरूष प्रत्ये

बंधुभावथी जोइश.) अने लूटवाळा पात्रने पण विषयतृप्तिनो पदार्थ न मानतां हदमां रहीने व्यवहार साचवीश. म्हारुं मन विषय संबंधी विचारोथी मुक्त राखीश; म्हारी आंखोने विषयवृद्धिना पदार्थो तरफ लळीलळीने जोतां अटकावीश; म्हारी जीभने अश्लील शब्दोच्चार करतां पकडी राखीश.

(५) आजना दिवसमां म्हाराथी बनशे त्हां सुधी परिग्रहमां लुब्ध थवाना स्वभाव उपर अंकुश राखीश. स्थावर अने जंगम परिग्रह जे म्हारी पासे छे ते उपरांत नवो रु. (   ) नी किमतथी वधु आजना दिवसमां प्राप्त थाय तो ते पर ममत्व न राखतां दुःखी जीवोने गुप्त रीते स्हाय करवामां अने ज्ञाननी भक्ति करवामां खर्ची नाखीश.

(६) आजना दिवसमां म्हाराथी बनशे त्हां सुधी, (   ) माइल उपरांत, परमार्थना कार्य सिवाय, भटकीश नहि.

(७) आजना दिवसमां म्हाराथी बनशे त्हां सुधी, उपभोग अने परिभोगना पदार्थो जेम बनशे तेम ओछा भोगवीश. वस्त्रादि परिभोगनी वस्तुओ अने खानापानादि उपभोगनी वस्तुओः ए वस्तुओनी जेम बने तेम थोडी संख्यानी म्हारा शरीरने गरज पडे एम करीश. जेम जरुर वधारे, तेम आत्माने वळगाट वधारे, अने पोता संबंधी विचारवानी फुरसद थोडी; एवुं समजी जेम बनशे तेम खावा-पीवा--पहेरवा–मर्दन करवा--सूवा वगेरे काममां वपराती चीजो पैकी थोडीज चीजोथी चलवी लइश. हुं म्हारी टेवोमां सादो, आत्मसंयमी, नियमीत अने मिताहारी बनीश.

(८) आजना दिवसमां म्हाराथी बनशे त्हां सुधी, अर्थ वगरना व्यापारमां मन--वचन--कायाने प्रवर्तावीश नहि. म्हारुं आत्मतत्व आडी अवळी खटपटो, गप्पांओ, चिंताओ, कुतर्को अने दुर्ध्यान वडे लूटावा दइश नहि. उपभोग--परिभोगनी चीजोमां मूर्च्छीतपणुं राखवाथी, अपध्यान (कोइनुं बुरुं इच्छवानुं ध्यान) ध्यावाथी, आत्मक्लेष करवाथी आत्मतत्व लूटाइ जाय छे ते याद राखीने मन--वचन--कायाना योगने जेम तेम उडाडी देवा पहेलां हुं बहु सावचेत रहीश.

(९) आजना दिवसमां म्हाराथी बनशे त्हां सुधी, चित्तनुं समतोलपणुं साचवी राखीश; अने आखो दिवस एवुं समतोलपणुं साचववानुं न बने तो छेवटे

४८ मीनीटनो के तेथी पण ओछो वखत " चित्तना समतोलपणा " ना महावरा माटे जूदो कहाडीश. ए जुदा कढायला वखतमां ' सामायिक व्रत ", मन--वचन--कायाथी पाप कर्म करवुं नहि--करावबुं नहि अने करताने अनुमोदवुं नहि एवा ९ भांगा पैकी जेटला भांगा म्हाराथी पळाय तेवा हशे तेटलाज भांगाथी [समजीने] आदरीश.

(१०) आजना दिवसमां म्हाराथी बनशे त्यहां सुधी (   ) माइलथी वधारे दूरनी जगाथी उपभोग--परिभोगनी वस्तु मगावीश नहि अगर एटले दूरथी आवेली वस्तु वापरीश नहि.

[आ व्रत अथवा नियम स्वदेशभक्तिनुं छे; हिंदुस्तान बहारथी वस्तु मंगावीश नहि अगर कोइए मंगावेली हशे ते वापरीश नहि, एवो नियम लेवाथी आ व्रत घणुं सारुं पाळयुं गणाशे.]

(११) आजना दिवसमां म्हाराथी बनशे त्यहां सुधी, यत्ना अने अप्रमाद्पणा वडे म्हारा आत्माने पोषीश अने वर्षमां (   ) दिवस पोषध व्रत आदरीश, के जे व्रतमां २४ कलाक तद्दन निर्दोष जीवन गुजारवानुं होवाथी आत्मा पोतानी उत्क्रान्ति संबंधी विचार करवानी फुरसद अने सगवड पामे छे.

(१२) आजना दिवसमां म्हाराथी बनशे त्यहां सुधी, पात्र अने सुपात्र दान दइश अने ए रीते म्हारा भोगांतरायी कर्मनो नाश करीश. गरीब दुःखी प्राणीओने दान, उपदेशक वर्गने दान, त्यागी महात्माने दान, एम पात्र अने सुपात्र दान देवानो प्रसग शोधीश अने प्रसंग आव्ये उल्लासथी दान दइश.

* * *

आ दरेक नियममां म्हें " म्हाराथी बनशे त्यहां सुधी " एवा शब्दो वापर्या छे; परन्तु विश्वमां एवी कोइ चीज नथी के जे हुं धारुं तो नज बनी शके. मात्र म्हारा धारवा उपर--म्हारा निश्चय उपर बधो आधार छे. माटे हुं म्हारा चित्तने दृढ बनावीश अने " बोलवुं थोडुं अने करवुं वधारे " ए नियमने लक्षमां राखीने कराता आ नियमो हुं चुस्तपणे पाळीश. श्रद्धा अने दृढताना सागर जेवा श्री पार्श्वनाथ प्रभुनुं ध्यान म्हने एवुं चुस्तपणुं आपनार थाओ !

श्री कल्याणमंदिर स्तोत्र

अथवा

'ध्यान'नो पाठ.

An exercise in Meditation.

आपणा आंतरिक देहने शुद्ध करीने त्यार पछी तेने मजबुत करवा माटे 'ध्यान'नी दवा रामबाण छे. ध्याननुं उपयोगीपणुं आजकाल थोडा ज जैनो जाणे छे.

त्हमारे ध्यान धरवुं होय तो, एकांतमां-कोइ उंडा ओरडामां के बने तो गाम बहार निर्जन स्थळमां जइने स्वच्छ पंचीउं पहेरीने बेसो. बेसवाने माटे अनेक तरेहनां 'आसन' होय छे परन्तु सौथी सारुं 'आसन' ते छे के जे त्हमने कोइ जातनुं कष्ट न आपे. कोइ कठीन आसन करवाथी त्हमारुं चित्त ते आसनने लीधे थती बेचेनीमां जाय छे.

त्हमारी आंखो बंध करो. दुनीआना सघळा विचारोने त्हमारा मनमांथी देशनीकाल करो. कोइ पदार्थना देखाव के कोइ विचार त्हमारी समक्ष खडा थाय तो तेने कहो केः "म्हारे त्हमारुं काम नथी, चाल्या जाओ!" कोइ सारा विचारो आवे तो पण तेने कहो के "हमणां त्हमारो वारो नथी; हमणां त्हमे आराम करो."

पछी शुद्ध थयेला ते मनमां श्री पार्श्वनाथ प्रभुनुं स्मरण करो.

परन्तु त्हमे तेमने जोया होय एम याद करी शकता नथी. त्यहारे त्हमारे तेमनुं 'ध्यान' केवी रीते धरवुं?

सबुर; श्री सिद्धसेन दिवाकर अथवा कुमुदचंद्र आचार्य त्हमारा 'भोमीआ' बनशे. ते त्हमने याद करावशे के त्हमे एकवार श्री पार्श्वनाथ प्रभुनां दर्शन करेलां छे खरां. एमनुं प्रकाशीत शरीर, शान्त मुखमुद्रा, ज्ञाननी प्रभा, एमना 'अतिशय' ने लीधे थतो भव्य देखाव; ए सर्व त्हमे जोयेलुं छे; पण अनेक उपाधिओने लीधे ते त्हमे स्मरणमां लावी शकता नथी, माटे श्रीमान् कुमुदचंद्र आचार्य त्हमारी स्मरण शक्तिने मदद करवा माटे आ श्री 'कल्याणमंदीर स्तोत्र' रचीने त्हमारी समक्ष मुके छे. तेना श्लोको एक पछी एक वांचो, समजो अने मुखपाठ करी ते श्लोकोमांना विचारो कल्पना शक्ति वडे नजरे जोवा प्रयास करो. एवो एक प्रयास एनुं नाम ज 'ध्यान.'

श्री पार्श्वनाथ प्रभुने म्हारा नमस्कार हो! ए प्रभु केवा छे! जेना चरणकमळने खुद इंद्रादि पण नमस्कार करे छे, ते देवो के जेमने सर्व वैभव मळेलो छे तेओ कांइ ते प्रभुने कोइ वधु वैभव माटे नहि पण प्रभुना प्रकाशमान गुणो माटे ज नमे छे. तेवी रीते हुं पण ए प्रभुने नमीश, तेमना गुणग्राम गाइश अने ए गुणो म्हारा आत्मामां प्रज्वलीत थइ म्हने पण तेवो ज बनावे एम इच्छीश.

वसंततिलकावृत्त

कल्याणमंदिरमुदारमवद्यभेदि
भीताभयप्रदमनिन्दितमंघ्रिपद्मम् ॥
संसारसागरनिमज्जदशेषजंतु--
पोतायमानमभिनम्यजिनेश्वरस्य—

कल्याणना मंदिर रुप, इच्छीत वस्तु आपनार, पापनो नाश करनार, दुःखना समुद्ररुप संसारथी त्रासेला जीवोने 'अभय'दान आपनार, संसारसागरमां डूबता प्राणीओने 'स्टीमर' समान : एवा श्री जिनेश्वर पार्श्वनाथ प्रभुना चरणकमळने नमन करीने—

यस्यस्वयंसुरगुरुर्गरिमांबुराशेः
स्तोत्रंसुविस्तृतमतिर्नविभुर्विधातुम् ॥
तीर्थेश्वरस्यकमठस्मयधूमकेतो--
स्तस्याहमेषकिलसंस्तवनकरिष्ये   १—२

महाबुद्धिशाळी बृहस्पति जेवा पण जे प्रभुना महात्म्य रुपी सागरनुं वर्णन पुरेपुरुं करी शक्या नथी, अने कमठ नामे दैत्यना गर्वने बाळी नाखवामां जे प्रत्यक्ष अग्निरुप छे एवा तीर्थेश्वर श्री पार्श्व प्रभुनी हुं साचा दीलथी स्तुति करीश. १–२

सामान्यतोऽपितववर्णयितुंस्वरूप-
मस्मादृशाःकथमधीशभवंत्यधीशाः ॥
धृष्टोऽपिकौशिकशिशुर्यदिवादिवांधो
रूपंप्ररूपयतिकिंकिलघर्मरश्मेः ॥ ३ ॥

घूड पक्षीनुं बच्चुं-पछी ते भलेने गमे तेटलुं धीरजवाळुं होय तो पण-दिवसने विषे अंधापो होवाने लीधे सूर्यनुं स्वरुप वर्णववाने शक्तिमान नथी. तेवीज रीते, हे जिनराज ! म्हारा जेवो घूड आपना स्वरूपनुं सामान्य वर्णन पण केवी रीते करी शकवानो हतो ? ॥ ३ ॥

मोहक्षयादनुभवन्नपिनाथमर्त्या
नूनंगुणान्गणयितुंनतवक्षमेत ॥
कल्पांतवांतपयसःप्रकटोऽपियस्मा-
न्मीयेतकेनजलधेर्ननुरत्नराशिः ॥ ४ ॥

जेम प्रलयकाळने लीधे समुद्रनुं पाणी खसीजवाथी खुल्लो थयेलो रत्ननो समूह (पाणी दूर थवा छतां पण) कोइथी मापी शकाय नहि; तेम हे नाथ ! जेनामांथी मोह दूर थयेल छे एवा पुरुषो पण आपना गुणनुं वर्णन करवाने जोइती शक्ति धरावता नथी. ॥ ४ ॥

अभ्युद्यतोऽस्मितवनाथजडाशयोऽपि
कर्तुंस्तवंलसदसंख्यगुणाकरस्य
बालोऽपिकिंननिजबाहुयुगंवितत्य
विस्तीर्णतांकथयतिस्वधियांबुराशेः ॥ ५ ॥

जेम कोइ बाळक एक समुद्रनो विस्तार दर्शाववाने पोताना न्हानकडा बे हाथ लांबा करे छे (पण तेथी कांइ समुद्रनो विस्तार ख्यालमां आवी शके नहि) तेम हे नाथ ! मंद बुद्धिनो धणी एवो हुं आपना असंख्य प्रकाशीत गुणो रुपी खाणनुं वर्णन करवाने उद्यमी थयोछुं ! ॥ ५ ॥

ये योगिनामपिनयांतिगुणास्तवेश
वक्तुंकथंभवतितेषुममावकाशः ॥
जातातदेवमसमीक्षितकारितेयं
जल्पंतिवानिजगिराननुपक्षिणोऽपि ॥ ६

हे ईश ! योगी पुरुषो पण आपना गुणो वदवाने शक्तिमान थया नथी, तो पछी ते गुणो कथवाने म्हारी तो बुद्धि क्यांथी ज समर्थ थाय ? ए दृष्टिए जोतां तो म्हारुं आ साहस वगरविचार्युं गणाय एवुं छे; तथापि मनुष्यनी भाषा न समजवा छतां पक्षीओ शुं मनुष्य समक्ष पोताना भाव जणाववाना प्रयास नथी करता ? ॥६॥

आस्तामचिंत्यमहिमाजिनसंस्तवस्ते
नामापिपातिभवतोभवतोजगंति ॥
तीव्रातपोपहतपांथजनान्निदावे
प्रीणातिपद्मसरसःसरसोऽनिलोऽपि ॥ ७ ॥

हे जिनदेव ! ग्रीष्मकाळना सखत ताप वडे गभरायला मुसाफरोनी गभरामणने, दूर आवेला कमळवाळा सरोवर वडे शीतळ थयेलो पवनःपात्र जमटाडी शके छे; तेमज आपनी स्तुति तो घणीए महिमावाळी छे पण आपनुं नामस्मरण पण त्रिलोकना जीवोने संसारभ्रमणमांथी रक्षवाने समर्थ छे. ॥ ७ ॥

हृद्वर्तिनि त्वयि विभो शिथिलीभवंति
जंतोःक्षणेननिविडाअपिकर्मबंधाः ॥
सद्योभुजंगममयाइवमध्यभाग--
मभ्यागते वनशिखंडिनि चंदनस्य ॥ ८ ॥

हे विभो ! चंदनना वननी अंदर चंदनवृक्षोने थयेलुं सर्पनुं बंधन, ए वनमां मोरपक्षीना प्रवेश मात्रथी छूटी जाय छे; तेमज, आ विश्वनी अंदरना चंदन तुल्य प्राणीओने गाढां (कठीन) कर्मबंधने भरडो दीधो छे ते, ज्यहारे हृदयनी अंदर आप साक्षात्कार थाओछो त्यहारे, तेज क्षणे शिथिल थइ जाय छे !* ॥ ८ ॥

* आ श्लोक उपर लांबा वखत सुधी ध्यान धरवानी अगत्य छे. दरेक माणसे पोताने चंदननुं वृक्ष कल्पवुं. आ विश्व चंदनना वृक्षोथी ज भरपुर छे, सघळे सुगंधीज महेकी रही छे एम कल्पवुं. परन्तु आ वृक्षोमां एक खामी छे--तेओ प्रमादी छे अने एम जाणीने विषयादि अनेक सर्पो आवीने त्हेमने गाढो भरडो दे छे. परन्तु एवे वखते ज्ञान-दर्शन-चारित्रना सागर तुल्य तीर्थंकर प्रभुनुं ध्यान ते वनमां प्रवेश करे छे के तुरतज सर्पो छूटा थई नाश्या जाय छे. आ कल्पना घणी-घणीज सुंदर छे, आशाप्रेरक छे.

मुच्यंतएवमनुजाःसहसाजिनेंद्र !
रौद्रैरुपद्रवशतैस्त्वयिवीक्षितेऽपि ॥
गोस्वामिनिस्फुरिततेजसिदृष्टमात्रे
चौरैरिवाशुपशवःप्रपलायमानैः ॥ ९ ॥

हे जिनेन्द्र ! जेम प्रकाशमान सूर्यने अथवा पराक्रमी राजाने के गोवाळने जोतांज चोर लोको पशुओने मूकीने नासे छे; तेवीज रीते (हृदयमां) आपनां दर्शन मात्र थतां ज मनुष्यनां सेंकडो भयानक दुःखो स्हेजमां दूर थाय छे. ॥ ९ ॥

त्वंतारकोजिनकथंभविनांतएव
त्वामुद्वहन्तिहृदयेनयदुत्तरंतः ॥
यद्वादृतिस्तरतियज्जलमेषनून-
मंतर्गतस्यमरुतःसकिलानुभावः ॥ १० ॥

हे जिनदेव ! भव्य पुरुषोना 'तारक' एटले तारनारा आप कहेवाओछो ते शी रीते ? (कारण के) जेओ आ संसारसागरने तरे छे तेओ आपने पोताना हृदयमां धारण करीने तरता होवाथी उल्टा आपने तो तेओ तारता होय एम जणाय छे ! परन्तु ना; चामडानी मसकमां भरेलो वायु ते मसकने पाणीना उपर तारे छे, तेवीज रीते खरेखर आप पण भव्य जनोना हृदयमां रहीने तेमने तारोछो! १०

यस्मिन्हरप्रभृतयोऽपिहतप्रभावा-
स्सोऽपित्वयारतिपतिःक्षपितःक्षणेन ॥
विध्यापिताहुतभुजःपयसाऽथयेन
पीतंनकिंतदपिदुर्धरवाडवेन ॥ ११ ॥

हे प्रभो ! 'हर' वगेरेनो एटले ब्रह्मा*–विष्णु अने महेश्वरादिनो प्रभाव जे कामदेवथी हणायो तेज कामदेवने आपे तो क्षण मात्रमां हणी नांख्यो छे; जेमके अग्नि मात्रने बूझवी नाखनार जळने वडवानळ अग्नि तो उलटो पी जाय छे ! ११

* ब्रह्मा वगेरे देवोने पुराणोमां, अमुक आशयथी, कल्प्या छे. त्हेमां भाषानी खुबी लाववा ब्राह्मण लेखकोए व्यभिचारनो दोष (अजाणतांज) आरोपी दीधो छे. ते ब्रह्मा अथवा ते कल्पीत हरिहरादिनी अहीं वात छे. बाकी तो एनां ए नामो जिनदेवने बदले पण घणी जगाए वापरवामां आव्यां छे.

स्वामिन्ननल्पगरिमाणमपिप्रपन्ना-
स्त्वांजंतवःकथमहोहृदयेदधानाः ॥
जन्मोदधिंलघुतरंत्यतिलाघवेन
चिंत्योनहंतमहतांयदिवाप्रभावः ॥ १२ ॥

हे स्वामिन् ! प्राणीओ आ संसाररूपी समुद्रने, हृदयने विषे आपने धारण कर्या पछी पण पोते जाणे छेकज हल्का होय एम, स्हेजे तरी शके छे, ए म्होटुं आश्चर्य छे ! अतिशय भारे (गंभीर) एवा आपने धारण करीने जाणे पोते हलका थया होय एम सेहेलाइथी तरी शके ए तो म्होटुं आश्चर्यज कहेवाय; अथवा महान पुरुषोनो महिमा एवोज कांइक अलौकिक होय छे के जेनी कल्पना पण आपणाथी थइ शकती नथी.** १२

** बलूननी अंदर माणस वगेरनो घणो भार छतां मात्र थोडोक पवन अंदर भरवाथी बलून उलटुं हलकुं बनी उंचे च्हडे छे, तेम हे प्रभो ! मुज भारे कर्मीजीवमां तुं कृपा करी प्रवेश कर के जेथी हुं उंची दिशामां गति करी शकुं; एवो भावना भाववी.

क्रोधस्त्वयायदिविभोप्रथमंनिरस्तो
ध्वस्तास्तदाबतकथंकिलकर्मचौराः ॥
प्लोषत्यमुत्रयदिवाशिशिराऽपिलोके
नीलद्रुमाणिविपिनानिनाकिंहिमानि ॥ १३ ॥

हे विभो ! आपे जो क्रोधरुपी अग्निनो नाश प्रथमथी ज कर्यो हतो, तो पछी कर्मरुपी चोरोने शी रीते बाळी नाख्या ? अथवा ते पण खरुं छे. शीतळ एवा हीमना पडवाथी पण लीलां वनो जेम बळी जाय छे, तेमज आपे पण शान्ति रुपी शीतळ* हीमवडे कर्मरुपी चोरोना वननुं दहन कर्युं हशे ! ॥ १३ ॥

* मात्र तप वडेज नहि पण शीतळ गुण याने मनःशान्ति वडे कर्मनो नाश करी शकाय छे ए आ दृष्टांत उपरथी समजी राखवा जेवुं छे.

✿✶✿✶✶✿

त्वांयोगिनोजिनसदापरमात्मरूप-
मन्वेषयंतिहृदयांबुजकोशदेशे ॥
पूतस्यनिर्मलरुचेर्यदिवाकिमन्य
दक्षस्यसंभविपदंननुकर्णिकायाः ॥ १४ ॥

हे जिनेश्वर ! परमात्मरुप एवा आपने, योगियो निरंतर पोताना हृदय-कमळने विषे ज जुए छे ते योग्य ज छे; केमके पवित्र अने निर्मळ कान्तिवाळा कमळना बीजनुं स्थळ, कमळना मध्य प्रदेशमां रहेली कर्णिकामां ज संभवे छे.* ॥ १४ ॥

* ध्यान धरवा माटे आ सूचना अमूल्य छे. बीज रुप शुद्ध स्वरुपनुं ध्यान हृदयकमळमां ज थाय छे. तीर्थंकर जेवोज आपणो पण आत्मा छे; तीर्थंकरने ध्यातां निज आत्मानां दर्शन थशे.

ध्यानाज्जिनेशभवतोभविनःक्षणेन
देहंविहायपरमात्मदशांव्रजंति ॥
तीव्रानलादुपलभावमपास्यलोके
चामीकरत्वमचिरादिवधातुभेदाः ॥ १५ ॥

हे जिनदेव ! जेवी रीते तिव्र अग्निना तापथी जूदी जूदी धातुओ पत्थरपणाने छोडीने तत्काळ सुवर्णपणाने पामे छे, तेवी रीते भव्यजनो आपनुं ध्यान धरवाथी (तेटली घडीने माटे) भौतिक देहने छोडीने क्षण मात्रमां परमात्मदशाने पामी जाय छे.* ॥ १५ ॥

* ध्यानारुढ थवाथी स्थूल देहने भूलीने परमात्मदशा प्राप्त थाय छे. ए दशाभी आगळ वधनाराओ स्थूल देहने अहीं छोडीने विश्वमां विचरी शके छे.

अंतःसदैवजिनयस्यविभाव्यसेत्वं
भव्यैःकथंतदपिनाशयसेशरीरम् ॥
एतत्स्वरूपमथमध्यविवर्तिनोहि
यद्विग्रहंप्रशमयंतिमहानुभावाः ॥ १६ ॥

हे जिनेश्वर ! भव्यजनो जे देहनी अंदर निरंतर आपनुं ध्यान धरे छे, तेज देहनो आप केम नाश करो छो ? पण एमां शंका जेवुं नथी; केमके जे महात्माओ माध्यस्थपणुं धारण करे छे त्हेमनी रीतज एवी होय छे के तेओ 'विग्रह'नो नाश करे छे !* ॥ १६ ॥

* माध्यस्थ पुरुषो विग्रह अथवा युद्धनो नाश करे छे तेम जिनेश्वर पण, आ स्थूल देहमां रहेनारने दररोजना व्यवहार माटे अनेक जीवोथी विग्रह (Struggle for Existence) करवोज पडे छे माटे तेवो विग्रह करनार देहनोज अंत लावे छे अर्थात् विदेही बनावे छे. अहीं तीर्थंकरने शरीरनो बनावनार अने नाश करनार न समजतां, शरीरी अथवा देहधारी बनावनार एवां जे कर्मो त्हेमनो नाश करनार समजवानी काळजी राखवी.

आत्मा मनीषिभिरयं त्वदभेदबुद्धया
ध्यातो जिनेन्द्र भवतीह भवत्प्रभावः ॥
पानीयमप्यमृतमित्यनुचिंत्यमानं
किं नाम नो विषविकारमपाकरोति ॥ १७ ॥

हे जिनेन्द्र ! जेम श्रद्धा अथवा मंत्रादिक प्रयोगवडे करीने जे पाणीने विषे अमृतपणुं आरोप्युं होय छे, तेवा पाणीमात्रथी पण विषनो विकार मटी जाय छे; तेम आत्मा अने आप एकज* छो एवी अभेद बुद्धिरुपी श्रद्धाथी जे पंडितो आपनुं ध्यान धरे छे तेओ आ लोकने विषेज आपना जेवा थाय छे ! १७

* आत्मा अने परमात्मा ते एकज छे एवो अडग श्रद्धा एज तरवानो रस्तो छे ते लक्षमां राखो.

त्वामेव वीततमसं परवादिनोऽपि
नूनं विभो हरिहरादिधिया प्रपन्नाः ॥
किं काचकामलिभिरीश सितोऽपि शंखो
नो गृह्यते विविधवर्णविपर्ययेण ॥ १८ ॥

हे प्रभो ! जेम कमळाना रोगथी पीळी थयेली आंखोवाळो मनुष्य धोळा शंखने पण पीळो जुए छे, तेमज अन्यधर्मी पुरुषो पण हरि, हर, ब्रह्मा इत्यादिकनी बुद्धिथी, अज्ञानथी रहित (वीतराग) एवा आपनेज पामे छे.* १८

* हरि, हर, ब्रह्मा अने तीर्थंकर आदि नामो एकज 'शुद्धस्वरुप' ने ओळखाववा माटे वपराय छे. जूदा जूदा धर्मोवाळाओ नाम जूदां जूदां बोले छे, पण सर्व एकज तत्वने—शुद्ध स्वरुपने पामे छे. श्री जैनधर्मनो आ दृष्टिविशालता केवो अभिनंदनीय छे

धर्मोपदेशसमये सविधानुभावा-

दास्तां जनो भवति ते तरुरप्यशोकः ॥

अभ्युद्गते दिनपतौ समहीरुहोऽपि

किंवा विबोधमुपयाति न जीवलोकः ॥१९॥

हे स्वामिन् ! जेम सूर्यना उगवाथी माणसो जागे छे एटलुंज नहि पण वृक्षो पण पुष्प–पत्रथी प्रफुल्लित थाय छे; तेमज धर्मोपदेश वखते आपना समीपपणाने लीधे, वृक्षो पण 'अशोक'* थइ जाय छे; तो पछी माणसनी तो वात ज शी करवी ? ॥ १९ ॥

* अशोक वृक्ष ए 'समवसरण' वखतना आठ 'अतिशय'मांनो एक 'अतिशय' छे. ए वृक्ष तळे बेसीने भगवान धर्मकथा करे छे त्यारे एटलामां कोइ पण जीवनुं शोकातुरपणुं उभुं रही शकतुं नथी. आ 'अतिशय'नुं गूढ तत्त्व समजवा जेवुं छे.

चित्रं विभो कथमवाङ्मुखवृन्तमेव

विष्वक्पतत्यविरला सुरपुष्पवृष्टिः ॥

त्वद्गोचरे सुमनसां यदि वा मुनीश

गच्छंति नूनमध एव हि बंधनानि ॥ २० ॥

हे विभो ! समवसरणने विषे देवताओ आपनी चोतरफ जे पुष्पोनी निरंतर वृष्टि करे छे ते पुष्पोनां डींटां (बंधनो) आपना समीपमां आवतां नीचां मुखवाळां थइ जाय छे, ए खरेखर आश्चर्य छे ! अथवा तो ते योग्यज छे; केमके आपनी समीपमां आववाथी विद्वानोनां अने पुष्पोनां बंधन (कर्मबंधन के डींटां) जरूर अधोमुख थवांज जोइए.* ॥ २० ॥

* प्रभुनी समीप आवतां पुष्पोनां डींटां नीचे अने खीलेलो भाग उपर रहे ए कल्पना सुंदर छे. पुष्प समान उत्तम पुरुषो भगवाननी समीपमां आवतांज मोद पामे छे, अंतरात्मा प्रफुल्लीत थाय छे.

स्थाने गभीरहृदयोदधिसंभवायाः
पीयूषतां तव गिरः समुदीरयंति ॥
पीत्वा यतः परमसंमदसंगभाजो
भव्या व्रजंति तरसाऽप्यजरामरत्वम् ॥ २१ ॥

हे प्रभु ! आपना गंभीर हृदयरुपी समुद्रमांथी जे उपदेशधारा वहे छे त्हेमां जरुर अमृतपणुं रहेलुं छे; कारणके त्हेनुं पान करीने (सांभळीने) भव्य पुरुषो तत्काळ वृद्धावस्था तथा मृत्युना भय* रहित बने छे ! ॥२१ ॥

* प्रभु या प्रभुना धरावता ज्ञानी पुरुषनां वचनामृत सांभळवाथी कांइ मृत्यु के वृद्धावस्था अटकी शकवानो दावो कोइ करतुं नथी; मात्र ए बन्नेनो 'भय' न लागे एटलुंज कहेवानुं तात्पर्य छे. जो वृद्धावस्था अने मृत्युमांथी 'भय'पणुं दूर थाय तो ए 'स्थितिना फेरफारो' शुं दुःख करी शकवाना हता ?

स्वामिन्सुदूरमवनम्य समुत्पतंतो
मन्ये वदंति शुचयः सुरचामरौघाः ॥
येऽस्मै नतिं विदधते मुनिपुंगवाय
ते नूनमूर्ध्वगतयः खलु शुद्धभावाः ॥ २२ ॥

हे स्वामिन् ! समवसरणने विषे देवताओ आपनी समीपमां जे पवित्र चामरो वींझे छे ते चामरो नीचा नमीने पछी उंचा जाय छे; ते वखते ते चामरो कहेछे केः–" मुनिओमां श्रेष्ट एवा आपने जे कोइ शुद्ध भावथी नमन करशे तेओ पण अमारी पेठे उच्च गति ज पामशे ! " ॥ २२

श्यामं गभीरगिरमुज्वलहेमरत्न-
सिंहासनस्थमिहभव्यशिखंडिनस्त्वाम्॥
आलोकयंति रभसेन नदंतमुच्चै-
श्चामीकराद्रिशिरसीवनवांबुवाहम् ॥ २३ ॥

हे स्वामिन् ! जेम मेरु पर्वतना शिखर उपर अत्यंत गर्जना करता नवीन मेघने मोरपक्षीओ अत्यंत आतुरपणाथी जुए छे; तेमज समवसरणने विषे सुवर्ण अने रत्नोथी वनेला उज्वळ सिंहासननी अंदर बेठेला, श्याम रुपवाळा, अने गंभीर वाणीने उचरता एवा आपने भव्यजन रुपी मयूरो अत्यंत उत्सुकपणाथी जुएछे* ॥ २३ ॥

* आ देखाव कल्पनामां आववा दो. श्रीतीर्थंकर गुरुनुं आवुं स्वरुप कल्पो अने ज्ञाना-भिलाषी श्रोताओनी उत्सुकता कल्पो. वरसाद अने गर्जना अने मोरना टहुकार कल्पनामां आववा दो.

उद्गच्छता तव शितिद्युतिमंडलेन
लुप्तच्छदच्छविरशोकतरुर्बभूव ॥
सांनिध्यतोऽपि यदिवा तव वीतराग
नीरागतां व्रजति कोनसचेतनोऽपि ॥ २४ ॥

हे राग रहीत दशावाळा वीतराग देव ! श्यामरंगना आपना भामंडळनो* उंचे प्रसरती कान्तिवडे करीने, (आपना उपर छाया करी रहेला) अशोक वृक्षना पांदडांनो रंग लोपाइ जाय छे अने ए प्रमाणे ए जडवस्तु पण 'रंग' रहित थाय छे, तो पछी आपना समीपपणाने पामीने कयो सचेतन (प्राणी) 'राग' रहित-पणाने न पामे ?** ॥ २४ ॥

* Halo of light=मस्तकनी आसपास फेलायलां प्रकाशनां कीरणोनुं मंडळ-महात्माओनी आसपास ते अवश्य होय छे (सूर्यनी माफक)

** आवी कल्पनामां न्हावुं ए घणुं हितकारक छे. भगवानना भामंडळना तीव्र कीरणो त्हमारा हृदयमां दाखल थवा दो; ए किरणोना जबरा तेजथी त्हमारी 'लेश्या' ना रंग बदलाइने त्हमे रंगरहीत याने शुक्ल लेश्या पामशो.

भो भोः प्रमादमवधूय भजध्वमेन-
मागत्य निर्वृतिपुरीं प्रति सार्थवाहम् ॥
एतन्निवेदयति देव जगत्त्रयाय
मन्ये नदन्नभिनभः सुरदुंदुभिस्ते ॥ २५ ॥

हे देव ! हुं एम मानुंछुं के देवताओ समवसरण वखते जे वाजींत्रो वगाडे छे, ते, आकाशने विषे गर्जना करता शब्दो वडे आ समग्र त्रिलोकने एम जणावेछे केः-" अहो त्रिलोकना प्राणिओ ! त्हमे प्रमाद छोडीने, मोक्षपुरी विषे जता आ पार्श्वनाथ व्यापारीने भजो ! " ॥ २५ ॥

* तीर्थंकरनो सघळो उद्यम मोक्षप्राप्ति माटेज छे; हलका व्यापारमां त्हेमनुं लक्ष छेज नहि माटे त्हेमनो व्यापार--त्हेमनुं वर्त्तन केवुं उच्च--केवुं परोपकारमय छे त्हेनो ख्याल लावो अने तेवा प्रभुनां पडखां सेवो; अर्थात् ते बतावे तेवां कामो (प्रमाद छोडीने) करो.

उद्योतितेषु भवता भुवनेषु नाथ
तारान्वितो विधुरयं विहताधिकारः ॥
मुक्ताकलापकलितोल्लसितातपत्र-
व्याजात्त्रिधा धृततनुर्ध्रुवमभ्युपेतः ॥ २६ ॥

हे स्वामिन् ! आप ज्व्हारे आ त्रिलोकने विषे प्रकाशीत थया, त्व्हारे पछी तराओना समूहथी वींटाएलो चंद्रमा अधिकार रहीत (निरुपयोगी) थयो. अने तेथी करीने ते चंद्रमा, मोतीओना समूहवडे वींटाएलां अने प्रकाशमान एवां आपनां त्रण छत्रोनुं रुप धरीने पोतेज जाणे के आपनी पासे (सेवा करवाने) आव्यो होय नहि शुं ? एम जणाय छे ! ॥ २६ ॥

स्वेन प्रपूरितजगत्रयपिंडितेन
कांतिप्रतापयशसामिव संचयेन ॥
माणिक्यहेमरजत प्रविनिर्मितेन
शालत्रयेण भगवन्नभितो विभासि ॥ २७ ॥

हे भगवन् ! 'समवसरण' ने विषे जे माणिक्य, सोनुं अने रुपुं, ए त्रणना त्रण* किल्लावडे आप चारे पासेथी शोभो छो, ते त्रण किल्लाओ जाणे के आपनी कान्ति, प्रताप अने यशना समूहना त्रण गोळा होय, अने तेणे करीने आपे त्रण जगतने पूरीज दीधां होयनी एम शोभी रह्यां छे.

* उत्तमोत्तम त्रण चीजोना त्रण गढ भगवानने छे एटले शुं एवो सवाल आ पाठ करनारे पोताना अंतरात्माने पूछवाथी, साधुओ जे खुलासो नहि आपी शके तेवो खुलासो आपोआप मळशे. (कान्ति कया शरीरने होय, प्रताप कया शरीरनो होय, यश कया शरीरनो होय ए विचारी त्रण गढनो मर्म समजवो.)

दिव्यस्रजो जिन नमत्रिदशाधिपाना-
मुत्सृज्य रत्नरचितानपि मौलिबंधान् ॥
पादौ श्रयंति भवतो यदिवा परत्र
त्वत्संगमे सुमनसो न रमंत एव ॥ २८ ॥

हे जिन देव ! आपने नमस्कार करनारा देवताओना इंद्रोना रत्नथी बनावेला मुगटने विषे रहेली दिव्य पुष्पनी माळाओ, ते रत्नरचीत मुगटोने छोडीने पण आपना चरणारविंदनो आश्रय लेछे, ते योग्यज छे; केमके आपनो संग थया पछी सुमनस् (एटले पुष्पो, विद्वानो के देवो) बीजे स्थळे रमवुं पसंद नथी ज करता. ॥ २८ ॥

त्वं नाथ जन्मजलधेर्विपराङ्मुखोऽपि
यत्तारयस्यसुमतो निजपृष्ठलग्नान् ॥
युक्तं हि पार्थिवनिपस्य सतस्तवैव
चित्रंविभोयदसिकर्मविपाकशून्यः ॥ २९ ॥

हे नाथ ! आप आ संसारसमुद्रथी विमुख होवा छतां पण आपनी पाछळ लागेला एटले के आपनो आश्रय इच्छता प्राणीओने आप तारो छो, हे विश्वेश ! ते खरेखर योग्यज छे; केमके कुंभारनुं बनावेलुं माटीनुं वासण (गोळा आदिक) पोते ' विमुख ' छतां (=नीचे मोढुं राखीने) पोताना आश्रीतजनोने समुद्रमां तारी शके छे. पण आपने विषे एटलुं आश्चर्य छे के, ते गोळो तो 'कर्मविपाक'थी सहित होय छे, ज्हारे आप तो तेथी रहित छो छतां पण तारी शको छो ! ॥ २९ ॥

* गोळो कर्म विपाकथी सहित छे एटले के कुंभारे घडवा रुपी क्रिया करी ते कर्म अने पकाव्यो ते पाक. भगवानने कर्म छे ज नहि तेथी तेओने कर्म विपाकरहित कह्या.

विश्वेश्वरोऽपि जनपालक दुर्गतस्त्वं
किंवाऽक्षर प्रकृतिरप्यलिपिस्त्वमीश ॥
अज्ञानवत्यपि सदैव कथंचिदेव
ज्ञानंत्वयिस्फुरतिविश्वविकाशहेतुः ॥ ३० ॥

हे जनपालक ! आप जगतना ईश्वर छो, तथापि ' दुर्गत '[1] छो ! हे ईश्वर ! आप अक्षर[2] छो, तथापि लिपि[3] थी रहित छो ! हे देव ! आप अज्ञानवान छो, तथापि जगतने बोध पमाडनार ज्ञान आपने विषे निरंतर स्फुरायमान छे. ॥ ३० ॥

१ दुर्गत=(१) दरिद्री; अथवा (२) दुःखे करीने--मुश्केलीथी जेनी गम पडे तेवा, जेने पामतां मुश्केली पडे तेवा. २ अक्षर शब्दना पण बे अर्थछेः क-ख वगेरे; तथा अविनाशी. ३ लिपि एटले भाषा अथवा कर्मनो लेप. ४ आ वाक्यना पण बे अर्थ छेः (१) आप ज्ञान रहित छो (२) आप ज्ञानीने तारनार छो. आखो श्लोक द्वीअर्थी छे. देखीती निंदा पण अंदरथी स्तुति करीछे.

प्राग्भारसंभृतनभांसि रजांसि रोषा-
दुत्थापितानि कमठेन शठेन यानि ॥
छायापि तैस्तव न नाथ हता हताशो
ग्रस्तस्त्वमीभिरयमेव परं दुरात्मा ॥ ३१ ॥

हे नाथ ! कमठ नामना शठ दैत्ये क्रोधायमान थइने आकाशने ढांकी नांखे एवी रीते आपना उपर धूळ उडाडी तेथी करीने आपनी तो छाया सरखी पण ढंकाइ नहि. उलटो निराश थएलो ते दुष्ट पोतेज त्हेनाथी ग्रसीत थयो हतो ! ॥ ३१ ॥

यद्गर्जदूर्जितघनौघमदभ्रभीमं
भ्रश्यत्तडिन्मुसलमांसलघोरधारम् ॥
दैत्येन मुक्तमथ दुस्तरवारि दध्रे
तेनैव तस्य जिन दुस्तरवारिकृत्यम् ॥ ३२ ॥

हे जिनराज ! वळी एज कमठासुरे अत्यंत गर्जना करनारा, अने विजळीओना चमकारायुक्त एवा घनघोर वर्षादथी आपना उपर दुस्तर (तरी न शकाय एटलुं) पाणी वर्षाव्युं; तथापि तेज पाणीए त्हेने पोताने माटे घणी खराब तलवारनुं काम कर्युं ! ॥ ३२ ॥

ध्वस्तोर्ध्वकेशविकृताकृतिमर्त्यमुंड
प्रालंबभृद्भयदवक्त्रविनिर्यदग्निः ॥
प्रेतव्रजः प्रति भवंतमपीरितो यः
सोऽस्याभवत्प्रतिभवंभवदुःखहेतुः ॥ ३३ ॥

जेमना माथा उपर उंचा लांबा वाळो लटकी रह्या छे, अने जेमणे मरी गयेलां माणसोनां माथांनी खोपरीओनी लांबी माळाओ पेहेरेली छे, तेमज जेमनां म्होंमांथी भयानक अग्नि निकळी रह्यो छे, एवा भूतो (प्रेतो) नो जे समूह आपना प्रत्ये ते कमठ दैत्ये मोकल्यो हतो, ते तो उलटो त्हेनेज भवपरंपरा रूपी दुःखनुं कारण थइ पडयो ! ॥ ३३ ॥

धन्यास्त एव भुवनाधिप ये त्रिसंध्य
माराधयंति विधिवद्विधुतान्यकृत्याः ॥
भक्त्योल्लसत्पुलकपक्ष्मलदेहदेशाः
पादद्वयंतवविभो भुवि जन्मभाजः ॥ ३४ ॥

हे त्रिलोकनाथ ! जे भव्यजनो आ पृथ्वीने विषे अन्य तमाम कार्यो छोडीने भक्तिना उल्लासथी रोमांचीत* बनी त्रणे काळ आपना चरणकमळनुं यथाशास्त्र आराधन करे छे त्हेमने धन्य छे ! ॥ ३ ॥

* आ पाठ करनारे आ श्लोकमां बताव्या प्रमाणे रोमांच थाय त्यहारे समजवुं के भक्तिभाव खरेखरो प्रगम्यो छे.

अस्मिन्नपारभववारिनिधौ मुनीश
मन्ये न मे श्रवणगोचरतां गतोऽसि ॥
आकर्णिते तु तव गोत्र पवित्र मंत्रे
किंवा विपद्विषधरी सविधंसमेति ॥ ३५ ॥

हे मुनिओना पण ईश्वर ! आ अनंत संसाररुपी सागरने विषे आप म्हने कर्णगोचर थयाज नहि हो एम हुं मानुंछुं; केमके आपना नामरुपी पवित्र मंत्रने सांभळया छतां आ आपत्ति रुपी सापेण म्हारी पासे केवी रीते आवी शके ? ॥३५॥

जन्मान्तरेऽपि तव पादयुगं न देव
मन्ये मया महितमीहितदानदक्षम् ॥
तेनेह जन्मनि मुनीश पराभवानां
जातो निकेतनमहं मथिताशयानाम् ॥ ३६ ॥

हे देव ! इच्छित वस्तुने आपवामां समर्थ (चतुर) एवुं आपनुं जे चरणयुगल (बे पग) तेहने म्हें जन्मान्तरमां पण नहिज स्तव्या होय; तेथी ज तो हुं आ भवने विषे अंतःकरणने भेदी नाखे एवा पराभवनुं स्थानक थयेलोछुं. ॥३६॥

नूनं न मोहतिमिरावृतलोचनेन
पूर्वं विभो सकृदपि प्रविलोकितोऽसि ॥
मर्माविधो विधुरयंति हि मामनर्थाः
प्रोद्यत्प्रबंधगतयः कथमन्यथैते ॥ ३७ ॥

हे विभो ! अज्ञानरूपी अंधकारथी ढंकाइ गयेली म्हारी आंखोथी, म्हें कदी एकवार पण आपने जोया नहिज होय; केमके जो आपनां दर्शन म्हने थयां होत तो जेमना कर्मना बंधननी गति अतिशय बळवान छे, एवा अनर्थो (दुःखो) म्हारा अंतःकरणने केम विदारी शकत ? ॥ ३७ ॥

आकर्णितोऽपिमहितोऽपिनिरीक्षितोपि
नूनं नचेतसिमया विधृतोऽसि भक्त्या ॥
जातोऽस्मि तेन जनबांधव दुःखपात्रं
यस्मात्क्रियाःप्रतिफलंतिनभावशून्याः ॥ ३८ ॥

हे जनबांधव ! कदाच म्हें आपनुं श्रवण कर्युं हशे, कदाच पूजन कर्युं हशे, अने कदाच दर्शन कर्यां हशे, तो पछी एटलुं तो खरुंज के भक्तिवडे म्हें आपने अंतःकरणमां* धारण तो नहिज कर्या होय; अने तेथी करीने ज हुं दुःखनुं पात्र थयेलो छुं. ॥ ३८ ॥

* आ श्लोक दुःखो कापवानो खरो रस्तो बतावे छे. भगवानने जोया होय, पूजा करी होय तो पण दुःख दूर न थाय पण जो भगवानने हृदयमां धारण कर्या होय तो अवश्य दुःख दूर थाय. माटे हृदयमंदिरमां भगवानने स्थापो एटले पछो कल्याणमंदिरमां तमने पण जगा मळशे.

त्वं नाथ दुःखिजनवत्सल हे शरण्य
कारुण्यपुण्यवसत वशिनां वरेण्य ॥
भक्त्या नते मयि महेश दयां विधाय
दुःखांकुरोद्दलनतत्परतां विधेहि ॥ ३९ ॥

हे नाथ ! हे दुःखी जनोने सुखना आपनार ! हे शरण करवा योग्य प्रभो ! हे दयालुपणानी पवित्र वसति (स्थळ) रुप ! हे योगियोमां श्रेष्ठ ! हे समर्थ ईश्वर ! हुं भक्तिवडे करीने आपने नमुंछुं; माटे म्हारापर कृपा करी म्हारा दुःखना जे जे अंकुरो* होय त्हेने उखेडो नाखवाने आप तत्पर थाओ ! ॥ ३९ ॥

* भगवान कांइ कोइने दुःख आपताए नथी अने कोइनां दुःख कापवाए नवरा नथी. परन्तु अहीं तत्व समजवानुं छे. देखातां दुःखो सर्व प्रथम तो अंतरमां जन्म पामे छे. आपणे खोटी वासनाओ अने विकारोने जन्म आपीए छीए, ज्हेनो पडछायो--बहार दुःखना रुपमां पडे छे. हवे जो निर्विकार प्रभुनुं ध्यान धरीए तो त्हेमना जेवा थवाना 'विचार' थाय तेथी पेला खराब विकारो नाश पामे अने तेथा ते विकारोना पडछाया रुप दुःखो पण नाश पामे.

निःसंख्यसारशरणं शरणं शरण्य-
मासाद्य सादितरिपु प्रथितावदातम् ॥
त्वत्पादपंकजमपि प्रणिधानवंध्यो
वध्योऽस्मिचेद्भुवनपावनहाहतोऽस्मि ॥ ४० ॥

हे त्रण जगत्ने पवित्र करनार ! असंख्य बळना अथवा पदार्थना आश्रय रुप, अने कर्मरुपी शत्रुओनो नाश करवामां प्रसिद्ध कीर्त्तिवाळां, एवां जे आपनां चरण रुपी कमळ त्हेनुं शरण पामीने पणी पण जो हुं 'ध्यान' थी हीण* रहुं, तो पछी हणवाने योग्य एवो हुं (म्हारी पोतानी मेळेज) हणायेलो छुं ! ॥४०॥

* चरणकमळनुं शरण पामवुं ते करतां 'ध्यान' पामवुं वधारे दुष्कर छे एम आ श्लोक साक्षी पूरे छे; जेओ मात्र पाठ बोली जाय छे तेओ 'कर्मथी हणायला' ज रहे छे; जेओ पाठमां पुरेला 'भाव' ने 'ध्यान' मां-समाधिमां उतारी विचारे छे-मनन करे छे तेओज सुखी थाय छे.

देवेंद्रवंद्य विदिताखिलवस्तुसार
संसारतारक विभो भुवनाधिनाथ ॥
त्रायस्व देव करुणाहृद मां पुनीहि
सीदंतमद्य भयदव्यसनांबुराशेः ॥ ४१ ॥

हे देवताओना इंद्रने पण नमन करवा योग्य ! हे समग्र वस्तुना सारने जाणनार ! हे संसाररूपी समुद्रमांथी तारनार ! हे प्रभो ! हे त्रणभुवनना पति ! हे देव ! हे करुणाना झरा ! हुं अत्यंत खेद पामुं छुं, म्हने पवित्र करो, आ भयानक संसारमांथी म्हने तारो* ॥ ४१ ॥

* आ श्लोको एक पछी एक छेवटनी आजीजी रुपे छे अने कोइ अरजदार सघळी दलीलो पुरी कर्या पछी कालावालानो हद वाळे अने खोळापाथरी करे एवो अहीं भाव छे. पाठ करनार एवी दशानो अनुभव करवो. (श्लोकना छेल्ला शब्दो समजवा जेवा छे: "हुं खेद पामुंछुं—म्हने 'पवित्र' करो एटले खेद दूर थाय; म्हने 'पवित्र' करो एटले संसारनो भय दूर थाय." मागणी मात्र पवित्रतानी ज छे. भगवाननी पासे बीजुं मागनारा भूला भमे छे.)

यद्यस्ति नाथ भवदंघ्रिसरोरुहाणां
भक्तेः फलं किमपि संततिसंचितायाः ॥
तन्मे त्वदेकशरणस्य शरण्य भूयाः
स्वामी त्वमेवभूवनेऽत्रभवांतरेऽपि ॥ ४२ ॥

हे नाथ ! निरंतर करवाथी एकठी थयेली आपना चरणकमळनी भक्तिनुं जो कांइपण फळ होय तो. हे शरण करवा योग्य ! मात्र आपनाज शरणे रहेलो एवो जे हुं त्हेना आ भवमां अने अन्य तमाम भवांतरमां पण आप ज स्वामी थजो ! ॥ ४२ ॥

* भक्तिने वश थइ निश्चय करेले के म्हारे सम्पूर्ण गुणसागर प्रभु सिवाय बीजा तरफ पूज्यभाव धरावयो नहि अने बीजानो खुशामत करवो नहि. (आत्मज्ञानी पोताना उन्नतिक्रममां दाखल थयो थको मात्र 'सम्पूर्ण सत्य'ने ज लक्ष्य बनावे.)

इत्थं समाहितधियो विधिवज्जिनेंद्र
सांद्रोल्लसत्पुलककंचुकितांगभागाः ॥
त्वद्बिंबनिर्मलमुखांबुजबद्धलक्ष्या
ये संस्तवंतवविभोरचयंति भव्याः—

जे भव्यजनोनी बुद्धि विधि प्रमाणे आपनी समाधिमां लागी छे, जेमनी काया आपना उपरनी अत्यंत प्रीति वडे गाढ रोमांच अनुभवी रहीछे, अने जेमनी दृष्टि आपना मुख रुपी निर्मळ कमळने विषे च्होंटेली छे एवा जे भव्यजनो आपनी स्तुति करे छे तेओ—

जननयनकुमुदचंद्र·
प्रभास्वराः स्वर्गसंपदोभुक्त्वा ॥
ते विगलितमलनिचया
अचिरान्मोक्षं प्रपद्यंते ॥ ४३-४४ ॥

अर्थात् ते भव्यो, हे मणुष्यनेत्ररुपी कुमुदिनीना* चंद्ररुपी स्वामिन् ! पोतानुं मन निर्मळ थवाथी देदीप्यमान स्वर्गनी संपत्तिओने भोगवीने शीघ्र मोक्ष पामे छे. ४३-४४

* कुमुदचंद्र ए आ स्तोत्रना मूळ कर्त्तानुं नाम छे ते आ श्लोकमां युक्तिपुर्वक गुंथेलुं छे. कुमुदिनी एटले जळमां उगतुं कमळ जेम चंद्रने जोइने विकसे छे, तेम प्रभुना नाम-स्मरण के हृदयमां साक्षात् प्रभुना दर्शनथी भक्तजनोनां मन प्रफुल्लीत थाय छे. आम थतां मन छेकज निर्मळ थवाथी तेवो भक्त स्वर्गलोक अने अनुक्रमे मोक्ष पामे छे. ध्यान राख-वानुं छे के प्रभु कांइ आपतो नथी; ते तो मात्र हृदयमां देखाय अने तेथी हृदयमां दीवो-प्रकाश थाय-सघळुं पापरुपी अंधारुं ते दीवावडे दूर थाय अने परिणामे परोपकारी कार्य बनी शके तथी मोक्ष मळी शके.

अहीं श्री कल्याणमंदीर स्तोत्र पूरुं थाय छे. कोई सखस एकाग्र चित्ते एकांतमां सम्पूर्ण दृढतापूर्वक जो आ पाठ करे अने लागलागट अनेक मास एकज टाइमे तेम कर्या करे तो इच्छीत कार्य सफळ करी शके, एमां कांइ शक जेवुं नथी. एवा अखतरा अजमावेला छे. आ स्तोत्रथी वळी चित्तनी एकाग्रता रुपी लाभ थाय छे, हीप्नोटीक शक्ति आवे छे अने प्रभुस्मरणथी थती आत्मशुद्धिनो पण लाभ थाय छे. अर्थ समजी समजीने शब्दना उच्चार साथे तेवीज कल्पना करता जवुं जोइए.

भ्रमराना 'ध्यान' थी येळ भ्रमरी बने छे. जो 'ध्यान' खरेखर दृढ होय तो कशुं अशक्य नथी; बाकी मात्र पाठ बोलीजवाथी तो कशो आत्मिक लाभ थतो नथी.



श्री उँनमः श्रीपार्श्वनाथाय । विश्वचिंतामणीयते ॥ ह्रीँधरणेंद्रवैरोट्या। पद्मादेवीयुतायते ॥ १ ॥ शांतितुष्टिमहापुष्टि । धृतिकीर्त्तिविधायिने ॥ ओंह्रीँभूट-व्यालवैत्ताल । सर्व्वाधिर्व्याधिनाशने ॥ २ ॥ जयजिताख्याविज्जया । त्तापरा-विज्जयान्वितः ॥ ३ ॥ उँ असिआउसायनमः । स्तत्रत्रैलोक्यनाथतां ॥ चतुःषष्टि सुरेंद्रास्ते । भापतेछत्रचामरैः ॥ ४ ॥ श्रीशंखेश्वरमंडण । पार्श्वजिनप्रणतकल्पतरु ॥ कल्पचूरयदुष्ट्रातां । पुरय मे वांछितं नाथ ॥ ५ ॥ ओं ह्रीं श्रीं अर्हचंद्रप्रभपाद पंकज्जनीवासनी ज्वालामालनीतुभ्यंनमः ॥

॥ श्री पार्श्वनाथनो आ जाप १०८ वार करवा जेवो छे, एम एक जगाए वांचवामां आव्युं छे. इच्छा होय त्हेणे एक मास अजमायस करी आ पुस्तकना प्रसिद्ध कर्त्ताने परिणाम लखी जणाववा कृपा करवी. ॥

નં. ૪૭



હવે વાંચો આ ચોઠ્ઠી!
ખુદ ભગવાનના ઘરની!

હે લોકો! તહમારા ચાર્જમાં સોંપેલી મ્હારી પુત્રીઓ નામે લક્ષ્મી, સરસ્વતી અને શક્તિને તહમે તહમારી માલેકીની કરી લેવા જેવી નીચતા બતાવવા લાગ્યા છો તે વાત મ્હારાથી અજાણી નથી! અરે બિચારા અક્કલના ઓથમીરો! શું તહમે એટલુંએ નથી જાણતા કે તહમે મ્હને તો નાહજ ઠગી શકો?!

सात शोधकोए रात्री दिवस मथीने शोधी कहाडेलां रत्नो !

સાત સમર્થ શોધકો રત્નો શોધવા મંડી પડ્યા. બિચારાએ દહાડો ને રાત મહેનત કરી. ખાવા-પીવાનું તો જાણે માંડી જ વાળ્યું હતું; પણ લુગડાંનુંએ તેહેમને ભાન રહ્યું નહોતું. આવી તલ્લીનતાથી પોથાં થોથાં ફેંદતાં ફેંદતાં તેહેમને શું મળ્યું તે તહમે જાણો છો ?

નં. ૪૮



ઉજાન

તેહેમને ૭ રત્નો મળ્યાં: જેનાં નામ આ મુજબ હતાં: ૧ દાન ૨ શીલ ૩ ક્ષમા ૪ વીર્ય ૫ ધ્યાન ૬ વૈરાગ્ય ૭ જ્ઞાન. એ ૭ રત્ન મહા મુલ્યવાન હોવાથી તે શોધકો તે તહમારા બધાને માટે વારસામાં મુકતા ગયા છે. તેહેમણે વસીઅતનામામાં લખ્યું છે કે:-

'સમ' મિત્ર ! નવ છોડીએ, લછ ચોગણી હોય;
સુખ-દુઃખ રેખા કર્મકી, રામ કરે સો હોય !

'રામ' અથવા 'કર્મનો અચલ કાયદો' જે કરશે તેજ થશે. માટે સુખ-દુઃખની દરકાર ન કરતાં અને લક્ષ્મીની દરકાર ન કરતાં સાત રત્નોને જાળવી રાખજો !

श्री

भारतबन्धु प्रिण्टिङ्ग वर्क्स

(છાપખાનું)

જેમાં,

गुजराती, संस्कृत, इंग्रेजी

तमाम जातनुं छापवानुं काम शुद्ध अने सुंदर थाय छे.

ટાઈપના નમુના.

પ્રમાણિકતા

અને શુદ્ધતા

એજ અમારો કાયદો.

માલેક,

વાડીલાલ મોતીલાલ શાહ

અધિપતિ, 'જૈનસમાચાર.' તથા 'જૈનહિતેચ્છુ'

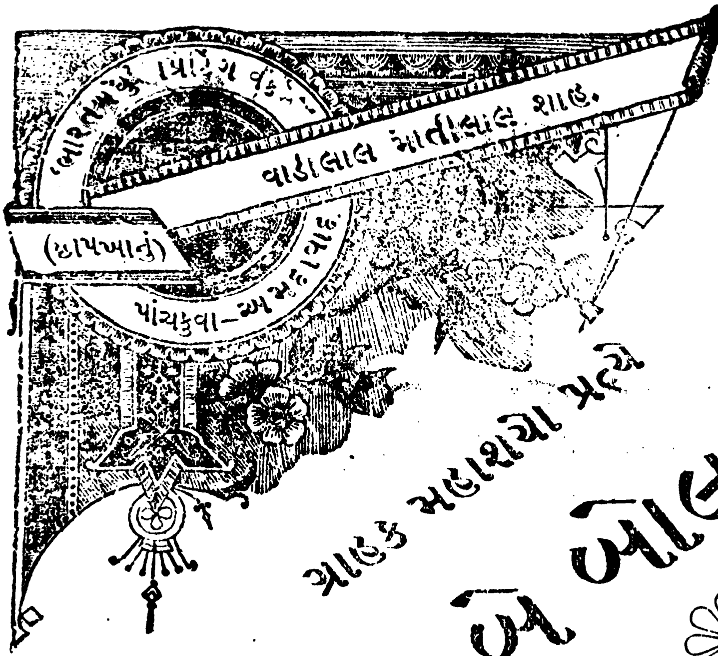
प्रेसनुं ठेकाणुः

पांचकुवा—गोलवाड,

अमदावाद [गुजरात].

૧૯૧૦

Printed at the 'Bharat Bandhu' P. Works.



ભારતબંધુ છાપખાનું ચિત્ર નં. ૩

ગ્રાહક મહાશયો પ્રત્યે બે બોલ

(૧) છપાવવાને લગતી કેટલીક કિંમતી સૂચનાઓ દરેક ગ્રાહકે લક્ષમાં રાખવા જેવી છે. અમોએ આવી સૂચનાઓ આ પછીના પાનામાં (ટાઈપના નમુના બતાવવા માટે આપેલાં વાકયોમાં) સમાવેલી છે; માટે નમુનાનાં વાકયો લક્ષપૂર્વક વાંચવા ભલામણ છે.

(૨) કોઇ પણ ચીજ છાપવા મોકલનારે ખાસ લક્ષમાં રાખવા જેવી વાત એ છે કે:—લખાણ સ્પષ્ટ લખી મોકલવું; કાગળની એક જ બાજુએ લખવું; પેનસીલથી નહિ પણ સાહીથી લખવું; ખીચોખીચ લીટીઓ ન લખવી તેમજ એક લીટીમાં ખીચોખીચ અક્ષર ન ભરવા; દસ્કત એવા લખવા કે ચાર ચોપડીઓ ભણેલો કમ્પોઝીટર સહેલાઇથી વાંચી શકે; કારણ કે બીબાં ગોઠવવાનું કામ કાંઇ વિદ્વાનો કરતા નથી—પણ થોડું ભણેલા કમ્પોઝીટરો કરે છે.

(૩) દરેક કામનાં પ્રુફ અમારી ઑફિસમાં જ વંચાશે. પ્રુફ વાંચવા ગ્રાહકને ઘેર કે બહાર ગામ મોકલવાની માગણી થશે તો ટાઇપ રોકાશે તે માટે ખાસ ભાવ લેવામાં આવશે.

(૪) ઉધાર કામ અમો કોઇ સાથે કરતા નથી. પુરા પૈસા ચુકવાતા સુધીમાં એક પણ નકલ અમો આપીશું નહિ.

(૫) સુંદર છાપ માટે સારા કાગળ જોઇએ. હલકા કાગળમાં છાપ ખીલી ઉઠતી નથી. એજ છાપ ઉંચા કાગળ ઉપર ઘણી દીપી નીકળે છે. માટે બનતાં સુધી સારા કાગળ વાપરવા ગ્રાહકોને ભલામણ કરવામાં આવે છે.

પત્રવ્યવહારઃ—વાડીલાલ મોતીલાલ શાહ.
માલેક 'ભારતબંધુ' પ્રિન્ટીંગ વર્ક્સ.
પાંચકુવા—અમદાવાદ.



ચિત્ર નં. ૨

શ્રી

વીર શાસનનો

જય હો!



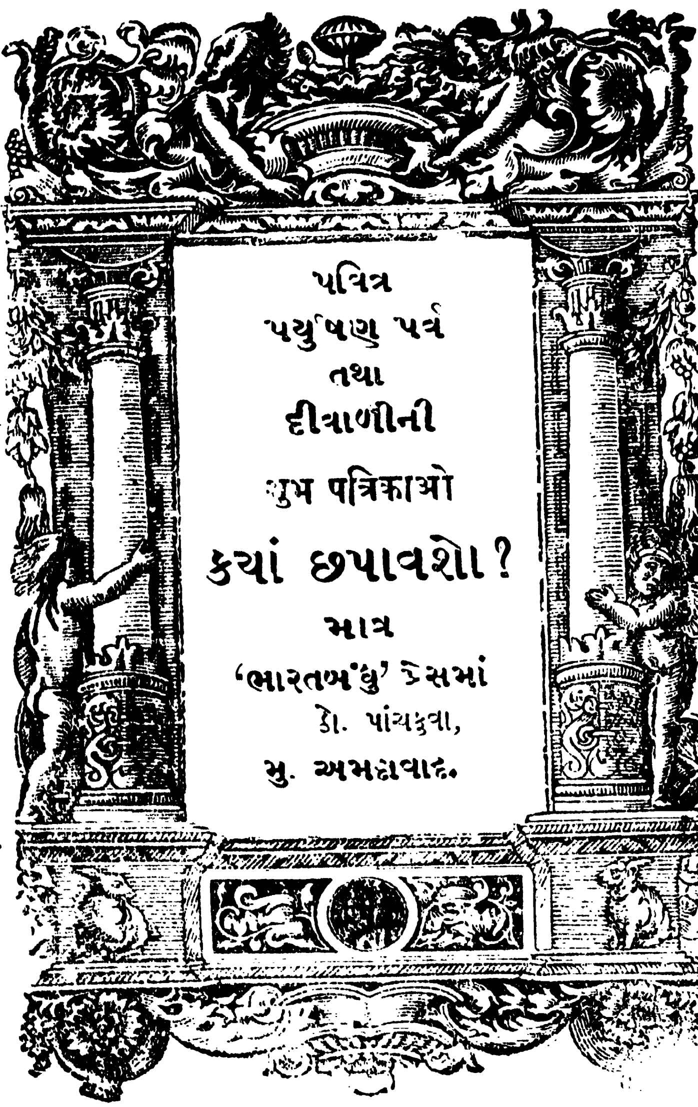
ચિત્ર નં. ૩

આપની ઇચ્છા
મુજબ લખાણ
મોકલશો તો
સુંદર ગોઠવણ કરી
કહેશો તેવા

**લાલ, સોનેરી,
રૂપેરી કે
લીલા રંગથી
છાપી આપવા-
માં આવશે.**

જેવો ભાવ
ખર્ચશો
તેવી સુંદરતા
થઇ શકશે.

ગુજરાતી તેમજ
શાસ્ત્રી બન્ને
જાતના ન્હાના
મોટા ટાઇપમાં
છાપી આપીશું.



ચિત્ર નં. ૧

કાર્ડ ઉપર તેમજ
નોટપેપરમાં
છાપેલી

**પર્યુષણપર્વની
કંકોત્રીઓ**

તથા

**શારદા પૂજન-
ના પત્રો**

તૈયાર પણ રાખ-
વામાં આવે છે.

મૂલ્યઃ

**૧૦૦ નકલના
૦—૮—૦**

हिंदीमें छपी हुई
पर्युषणकी कुमकुम
पत्रिका भी तैयार
मिलेगी और ऑ-
र्डर मुजब बना दी
जायगी.

શ્રી 'ભારતબન્ધુ' છાપખાનામાં વપરાતા

ગુજરાતી ટાઈપના નમુના.

નં. ૧—સ્મૉલ પાઇકા.

આજકાલ છાપખાનાં ઘણાં વધી ગયાં છે, પણ છાપખાનાની ભીડ હજી ભાગી નથી; એ તે શું? આજકાલ સન્યાસીઓ બહુ વધી ગયા છે, પણ સન્યાસીઓની ભીડ હજી ભાગી નથી, એના જેવુંજ.

મતલબ કે, પ્રમાણિકતાથી અને શુદ્ધતાપૂર્વક કામ કરનારાં છાપખાનાં થોડાંજ છે અને પ્રમાણમાં છાપવાનું કામ ધણું છે, તેથી કરીનેજ કહેવાયું કે "છાપખાનાની ભીડ હજી ભાગી નથી."

નં. ૨—પાઇકા.

પ્રથમ ન્હાનામાંથી મ્હોટા થવાય છે, એ ઘણા થોડા માણસો સમજે છે. સૌને ઝટપટ મ્હોટા થવાની લગની લાગી હોવાથી જ્યહાં ત્યહાં ન કરવાનું કરાતું આપણી નજરે પડે છે. જુઓ કે છાપખાનાની નમુનાની ચોપડીઓમાં પહેલાંજ મ્હોટા ટાઈપના નમુના અને છેક છેવટે ન્હાના ટાઈપના નમુના છાપનારા કેટલા બધા નજરે પડે છે? શું એ કુદરતનો કાનુન વિરૂદ્ધ નથી કે?

નં. ૩—સવાઇ પાઇકા.

અમારૂં પ્રેસ ન્હાનકડું જ છે; અમે કાંઇ મ્હોટા માતબર કારખાનાના માલેક નથી. પરંતુ અમે ન્હાના સાધનથી પણ હરકોઇ કામ માથે લેવા શક્તિમાન છીએ; કારણ કે અમે સમજીએ છીએ કે "ન્હાનામાંથી મ્હોટા થવાય છે." માત્ર પ્રમાણિકપણું પકડી રાખવું જોઇએ અને કામમાં શુદ્ધતા સાચવવી જોઇએ. એટલા માટે બનતા સુધી અમો જાતેજ પ્રુફ તપાસીએ છીએ.

નં. ૪—પાઇકા બ્લૅક.

"હમારા ભાવ ઘણાજ સસ્તા છે માટે અમારે ત્યહાં આવો" એવા પોકાર અમે કરી શકતા નથી. અમારૂં એમ માનવું છે કે પરોપકારના ઉદ્યમમાં તો નફો છોડી દેનારા નરરત્નો કેટલાક હોય છે. પણ રળવા માટે કરાતા ધંધામાં નફો લીધા સિવાય તો કોઇ કામ કરતું જ નથી. માટે જેઓ ઘણા ઓછા ભાવ બતાવે છે ત્હેમને તે ઓછા ભાવના કામમાંથી એક યા બીજી રીતની આવક હશે માટે જ તે ઓછો ભાવ લઇ શકતા હશે.

નં. ૫—સવાઇ બ્લૅક.

સારઃ અને શુદ્ધ કામ પાછળ વખત વધારેજ ખર્ચવો પડે અને કારખાનામાં તો વખત એજ પૈસો છે. જે કામમાં બીજા કામ કરતાં બે કલાક વધારે કહાડવા પડે તે કામના બીલમાં નોકરોનો બે કલાકનો પગાર ચ્હડાવવો જ પડે; નહિ તો કારખાનાને વ્હેલું તાળુ દેવું પડે.

નં. ૬—ટુ લાઇન પૈકા બ્લૅક.

શુદ્ધતા માટે કાચાં પ્રુફ બે—ત્રણ વખત વાંચી જવાં પડે; ત્હેમાં પ્રુફ વાંચનારનો અને ટાઈપ સુધારનારનો ઘણો વખત રોકાય છે. આથી કરીને જ જ્યહારે એક 'બુકસેલરીઆ કામ' નો ભાવ રૂ. ૩) હોય છે ત્યહારે તેજ કામ શુદ્ધતાપૂર્વક કરાવવા ઈચ્છનારને રૂ. ૪) ખર્ચવા પડે છે.

નં. ૭—ફોર લાઇન પૈકા બ્લૅક.

અમારા સઘળા ટાઇપ તદન નવા છે. તેથી છાપ સુંદર આવે છે.

शास्त्री टाइपना नमुना.

નં. ૮—પાઈકા શાસ્ત્રી.

आ जातना टाइप घणाज थोडां पुस्तकोमां वपराय छे; कारण के ते गोठवतां घणो वखत जाय छे अने तेथी भाव पण प्रमाणमा वधारे आपवो पडे छे. थोडी जगामां वधारे लखाण समाववुं होय एवा काममा (जेवा के कार्ड, नोटपेपर, पुस्तकमां टीका वगेरे काममां) आ टाइप वपराय .

નં. ૯—પૈકા બ્લૅક શાસ્ત્રી.

शास्त्री अथवा देवनागरी लिपिना नं. ९–१०–११ वगमांना हरकोइ जातना टाइ-पमां छापवानु काम जेटली झडपथी अमे करी आपीशुं तेटलुं अत्रेना कोइ प्रेसवाळा भाग्येज करी शकशे. एकवार काम पडवाथी खात्री थशे.

નં. ૧૦—ગ્રેટ બ્લૅક શાસ્ત્રી.

हमारा तरफथी एक अठवाडीक पत्र प्रगट थाय छे तेमां मुख्यत्वे अमो आ टाइप वापरीए छीए. शास्त्री टाइप गोठववानुं काम घणा थोडा कारीगरो

जाणे छे; कारण के एक अक्षर गोठवतां घणा टुकडा एकठा करवा पडे छे. एक गुजराती पृष्ट करतां एक शास्त्री पृष्ट गोठववामां लगभग डबल वखत जाय छे.

નં० ૧૧—વગીક શાસ્ત્રી.

छापवानुं काम लेतां पहेलां अमे भाव नक्की करीए छीए अने ग्राहकना हाथदस्कतनी सही लइए छीए. कागळखर्च जेटला पैसा आगळथी लेवानो अमारो ठराव छे. बाकीना पैसा काम पुरुं करीने पहोंचाडती वखते लइए छीए. कागळ घणी जातना आवे छे अने गमे तेवो होंशीयार माणस पण आ धंधानो अनुभव न होवाथी कागळना भावमां धाप खाइ बेसे छे. माटे जो अमारा उपर विश्वास राखवानुं ग्राहकोने पालवतुं हशे तो अमे नामनो ज नफो लइने जोइए तेवा कागळ पुरा पाडीशुं.

નં० ૧૨—ટુલાઇન શાસ્ત્રી.

पुस्तक, पावती बुक, चेक बुक, हुंडी बुक, कुंकुंपत्रिका, अपील, फॉर्म, हरकोई जातनुं जॉब काम वगेरे तमाम अमे छापीए छीए.

નં ૧૩—ફાઇવલાઇન શાસ્ત્રી.

पुस्तक शुद्ध करावबुं हशे तो शुध्ध करामण फी लइने ते पण करीए छीए.

शुभ काममां वपरातां चित्रो.


ચિત્ર નં૦ ૪

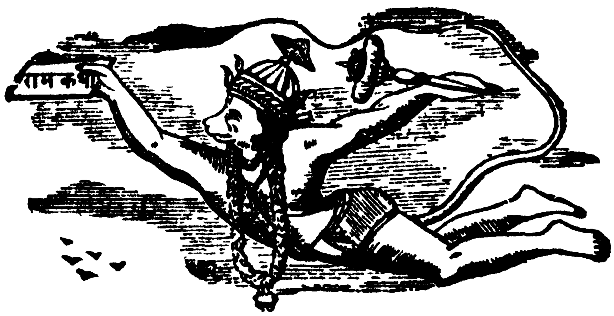

ચિત્ર નં૦ ૫

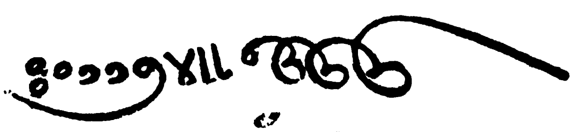

ચિત્ર નં૦ ૬



ચિત્ર નં૦ ૭


ચિત્ર નં૦ ૮


ચિત્ર નં૦ ૯



ચિત્ર નં૦ ૧૦


ચિત્ર નં૦ ૧૧


ચિત્ર નં૦ ૧૨

SAMPLES OF ENGLISH TYPE.

No. 1

AIM HIGH.

No. 2

BELIEVE AND LIVE!

No. 3

**ACT, ACT IN THE LIVING PRESENT
HEART WITHN & GOD OVERHEAD!**

No. 4

The "Bharat Bandhu" Printing Works will Satisfy you fully.

No. 5

"Truth and Love"

No. 6

We solicit simply a trial order.
See how neatly the work is executed.

No. 7

We are ready to undertake any job work or ***book work***

No. 8

VADILAL M. SHAH.

No. 9

"Neatness, Correct printing and Honesty" is our Motto.

No. 10

We are willing to purchase any kind of **English** type that a customer may select for his work.

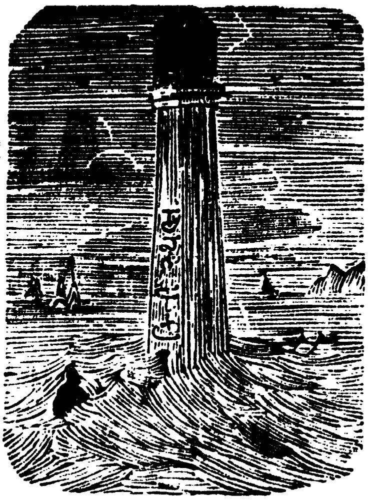
No. 11

The "Bharat Bandhu" is a splendid name! Is it not? **You can easily** remember it, we belieev.

No. 12

"*Bharat bandhu*" *printing works, near the five wells,* **Ahmedabad.**

એક બહાદુર નરની [illegible] [illegible] કહાણી!



નં. ૪૪

એક બહાદુર નર સંસાર સાગરથી ભય પામી દૂર નહિ નાસતાં હિંમતથી ત્હેમાં ઝીપલાવે છે. ત્હેને વિશ્વાસ છે કે ધર્મ રૂપી દીવાદાંડી તરફ નજર રાખીને મુસાફરી કરવાથી ત્હેના વાહાણુને મધ્યરાત્રીમાં પણ હરકત આવશે નહિ. પરન્તુ સમુદ્રની લીલા જોવામાં તલ્લીન થવાથી દીવાદાંડી નજીકમાં આવી પહોંચવા છતાં ત્હેને તે જોઈ શક્યો નહિ. તેથી ખડક સાથે અથડાઈ ત્હેનું વાહાણુ ભાગ્યું. પછી તે પસ્તાવામાં વખત ન ગુમાવતાં આત્મશક્તિમાં શ્રદ્ધા રાખી ભુજાથી તરવા લાગ્યો પડે છે. નીચેના ચિત્રમાં જુઓ તે કેવો તરે છે!



ન. ૪૫

નં. ૪૬

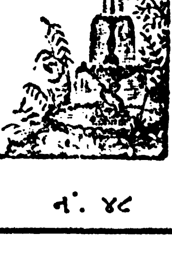


ખરેખર ભુજાથી સમુદ્ર તરવાનું કામ ઘણુંજ કઠીન તો છે. પણ જ્યહાં દૃઢ **ઇચ્છાશક્તિ** છે, ત્યહાં **અશકય** કાંઇ નથી. ત્હમે સર્વ આ ચિત્ર જોનારાઓ આ જ પ્રમાણે હિમત રાખીને સંસારસાગર તરજો. નિશ્ચયને મોળો કરશો તો સમુદ્રમાં ડૂબી જશો. અને સત્યાગ્રહી થશો તો આખરે બાજુનું ચિત્ર કહેછે તેમ દેવતાઓ તમને પુષ્પથી વધાવી લેશે.

વિજય હો! સત્યાગ્રહીનો વિજય હો!



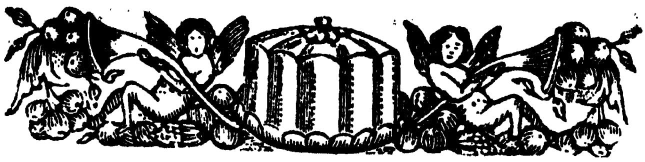
નં. ૪૭



નં. ૪૮

પ્રકરણના મથાળે મૂકવાનાં ચિત્રો.

નં. ૧૩



નં. ૧૪



નં. ૫



નં. ૧૬



નં. ૧૭



નં. ૧૮



પ્રકરણના પહેલા અક્ષરો માટે ચિત્રો.



નં. ૧૯



નં. ૨૦



નં. ૨૧



નં. ૨૨

જાનવરનાં ચિત્રો.



નં. ૨૪



નં. ૨૫



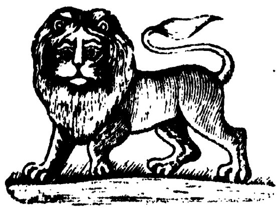
નં. ૨૬



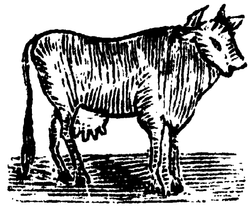
નં. ૨૭



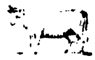
નં. ૨૮



નં. ૨૯



નં. ૩૦



નં. ૩૧



નં. ૩૨



નં. ૩૩



નં. ૩૪

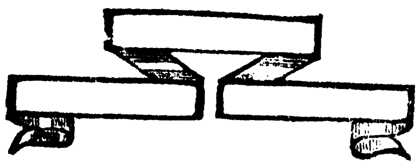


નં. ૩૫



નં. ૩૬

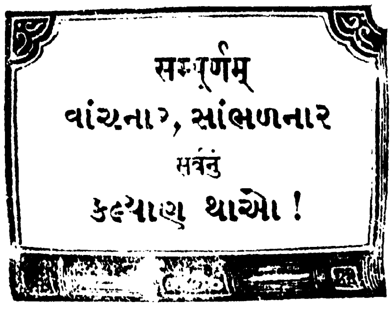
પુસ્તક સમાપ્તિનાં ચિત્રો.



નં. ૩૭



નં. ૩૮

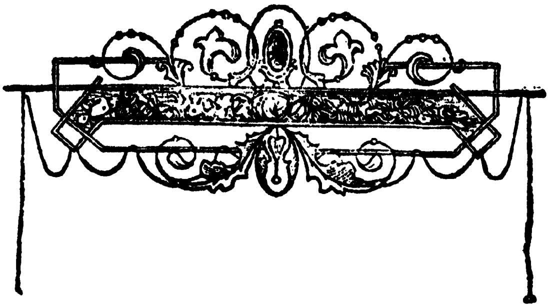


નં. ૩૯

સમાપ્ત.

મુખપૃષ્ઠ પર મુકવા લાયક ચિત્રો.

નં. ૩૮



નં. ૩૯





નં. ૪૦

નં. ૪૧



નં. ૪૨

આ ચિત્રો ઉપરાંત તરેહ તરેહની બૉર્ડરો અને રૂલોવડે પણ ફૅન્સી 'ડીબાચા' (મુખપૃષ્ઠ) કરી શકાય છે.

પરચુરણ ચિત્રો.



નં. ૪૯



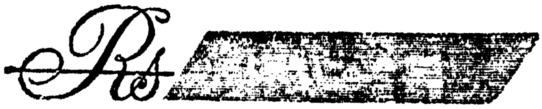
નં. ૫૦



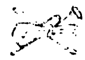
નં. ૫૧



નં. ૫૨



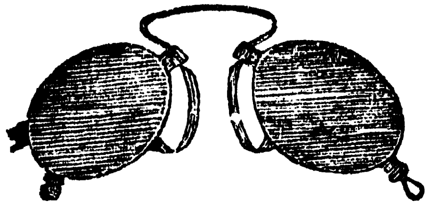
નં. ૫૩



નં. ૫૪



નં. ૫૫



નં. ૫૬



નં. ૫૭



નં. ૫૮



નં. ૫૯



નં. ૬૦



નં. ૬૧



નં. ૬૨



નં. ૬૩



નં. ૬૪



નં. ૬૫

નં. ૬૬





નં. ૬૭

નં. ૬૮



...ના ગોળા ઉપરથી પેલી દેવી શું પોકારે છે ?

...ની સ્હામે હું
'દુનીઆ નથી.
...નુષ્યો! ત્હમારે
અમારી તરફના
...ુંજ પડશે. ત્હ-
... ા વગેરેએ મરણ
...ની જીંદગી સંબંધી ડરા-
...ા વિચારો દમાવી દીધા
...ય તો તે દૂર કરી સાંભળો!
નથી, વચનથી કે કાયાથી
... પણ ભલું કરનાર મનુ-
...હીં મ્હારા જેવા દેવ
છે. દેવ અને દેવીઓ
...' ના જ વાતાવરણમાં
છે.

નં. ૭૦



'પ્રેમ' સિવાય ત્હેમને બીજો કાંઈ ખોરાક જોઇતો નથી, કારણ કે સ્થૂલ શરીર તો ત્હેમને છે જ નહિ. તેથી ઉંઘ, ભુખ, થાક, એ વગેરે સ્થિતિઓથી તેઓ બચીજ ગયા છે. ત્હેમને કામકાજ 'પ્રેમ'નું જ છે. સઘળા જીવોપર 'પ્રેમ' રાખવા—સઘળાને મદદ કરવી—સઘળાને સારા વિચારો પ્રેરવા એ વગેરે કામ જ તેઓ કરે છે. આહા કેવી સુખી જીંદગી! ત્હમને તેવી જીંદગી ગમે છે કે? તો અહીંજ 'દેવ' જેવા બનો; એટલે ત્હાં પણ દેવ થશો.

...ચાસોના નમુના.



નં. ૬

નં. ૧

બૉર્ડરો તથા રૂ-
લોના નમુના.

નં.

નં. ૧૧

નં. ૧૨

નં. ૧૩

નં. ૧૪

નં. ૧૫

નં. ૧૬



આપના નમ્ર સેવક,

વા. મો. શાહ.

'ભારતબંધુ' પ્રેસના માલેક અને 'જૈનસમાચાર'
'જૈનહિતેચ્છુ' તથા 'હિંદી જૈનહિતેચ્છુ'
પત્રોના અધિપતિ તથા માલેક.